विषय सूची

प्राचीन भारत

1. भारतीय इतिहास की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि.....**7-15**
2. प्रागैतिहासिक काल.....**16-25**
3. ऐतिहासिक स्त्रोत.....**26-58**
4. सिन्धु घाटी/हड़प्पा सभ्यता.....**59-80**
5. उत्तर हड़प्पा, ताम्र पाषाणिक, लौह युगीन, महापाषाणिक संस्कृतियाँ व मृदभाण्ड परम्परा.....**81-88**
6. वैदिक संस्कृति.....**89-119**
7. सामाजिक व धार्मिक सुधार आन्दोलन (जैन, बौद्ध व अन्य धार्मिक सम्प्रदाय).....**120-158**
8. महाजनपद काल, हर्यंक व नन्द वंश.....**159-165**
9. 600 ईसा पूर्व विदेशी आक्रमण (यूनानी एवं ईरानी)...**166-168**
10. मौर्यकाल.....**169-197**
11. संगमकाल (दक्षिण भारत).....**198-210**
12. उत्तर मौर्यकाल एवं विदेशी आक्रमण.....**211-222**
13. सातवाहन साम्राज्य (दक्षिण भारत).....**223-228**
14. गुप्तकाल.....**229-250**
15. गुप्तोत्तरकाल (वर्द्धन वंश).....**251-256**
16. भारतीय संस्कृति का विदेशों में प्रसार.....**257-267**
17. प्राचीन भारत में शिक्षण संस्थान.....**268-273**
18. पूर्व मध्यकाल (7वीं से 12वीं शताब्दी).....**274-314**
19. प्राचीन भारत की सामाजिक संरचना में परिवर्तन.....**315-326**

मध्यकालीन भारत

1. इस्लाम का उदय एवं अरब आक्रमण.....**2-5**
2. भारत पर तुर्की आक्रमण.....**6-8**
3. मध्यकालीन ऐतिहासिक स्त्रोत.....**9-21**
4. मध्यकालीन यात्री एवं उनके ग्रंथ.....**22-26**
5. सल्तनत काल.....**27-80**
6. भक्ति एवं सूफी आन्दोलन.....**81-99**
7. मध्यकालीन भारत के प्रांतीय राज्य.....**100-107**
8. विजयनगर साम्राज्य (दक्षिण भारत).....**108-114**
9. मुगल काल.....**115-197**

आधुनिक भारत

1. मराठा साम्राज्य.....**2-21**
2. यूरोपीय कम्पनियों का आगमन.....**22-32**
3. उत्तर मुगलकालीन शासक.....**33-39**
4. आधुनिक काल में प्रांतीय राज्यों का उदय.....**40-59**
5. ब्रिटिश शासन व अर्थव्यवस्था.....**60-67**
6. जनजातीय एवं किसान आन्दोलन.....**68-83**
7. आधुनिक भारत में समाज सुधार आन्दोलन.....**84-100**
8. धार्मिक, निम्न जाति, मजदूर एवं समाजवादी आन्दोलन.**101-110**
9. 1857 की क्रांति.....**111-125**
10. भारत में समाचार-पत्रों का विकास.....**126-137**
11. आधुनिक भारत में शिक्षा का विकास.....**138-146**
12. भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन.....**147-167**
13. महात्मा गांधी एवं आन्दोलन.....**168-207**
14. भारत का संवैधानिक विकास.....**208-217**

परिशिष्ट

1. कांग्रेस के वार्षिक सम्मेलन, प्रमुख राष्ट्रवादी नेता, भारत के गवर्नर जनरल एवं वायसराय, ब्रिटिश दरबार, महत्त्वपूर्ण तथ्य **1-84**

1 भारतीय इतिहास की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

- **इतिहास की उत्पत्ति :** इतिहास संस्कृत भाषा के तीन शब्दों इति (ऐसा ही), ह (निश्चित रूप से) एवं आस (था) से मिलकर बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ है- **ऐसा ही निश्चित रूप से था।**
- अंग्रेजी शब्द **'हिस्ट्री'** ग्रीक शब्द **'हिस्टोरिया'** से लिया गया है जिसका शाब्दिक अर्थ है- **शोध (गवेषणा) से प्राप्त ज्ञान। 'हिस्ट्रीज'** शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग यूनानी इतिहासकार **हेरोडोटस** (484–425 ई.पू.) ने अपनी रचना 'द हिस्ट्रीज' में किया। हमें सर्वप्रथम अथर्ववेद में इतिहास शब्द का उल्लेख मिलता है। **छांदोग्य उपनिषद्** में इतिहास पुराण को स्पष्ट रूप से **पंचम वेद** कहा गया है।
- इतिहास की महत्ता देखते हुए **कौटिल्य** ने भी कहा है कि ''राजा को प्रतिदिन कुछ समय इतिहास श्रवण में लगाना चाहिए।"
- **बरनी** ने "इतिहास को सभी विज्ञानों की रानी कहा।"
- **अबुल फजल** के अनुसार "इतिहास एक चिकित्सालय है। जहाँ व्यक्ति अपने दुखों की दवा पाता है और उदासी का इलाज कराता है।"
- भारत के प्रथम वास्तविक इतिहासकार **कल्हण** ने अपने ग्रंथ 'राजतंरगिणी' में लिखा है कि "जो व्यक्ति अतीत की घटनाओं को लिपिबद्ध करना चाहता है, उसे न्यायाधीश की तरह किसी भी पूर्वाग्रह से मुक्त होना चाहिए।"
- **सर्वप्रथम जेम्स मिल** ने अपनी पुस्तक 'History of British India में भारतीय इतिहास को तीन भागों में बांटा है-
  i. प्राचीन काल ii. मध्यकाल iii. आधुनिक काल
- ब्रिटेन के इतिहासकार **ई. एच. कार** ने अपनी पुस्तक 'इतिहास क्या है' में इतिहास की एक परिपूर्ण परिभाषा प्रस्तुत की कि "इतिहास अतीत व वर्तमान के बीच का अनवरत् संवाद है।" विश्व का प्रथम वास्तविक इतिहासकार **हेरोडोट्स** को माना जाता है। यूनानी इतिहासकार हेरोडोट्स (484 ई.पू.-425 ई.पू.) का जन्म 484 ई.पू. एशिया माईनर के हेलिकारनेसस में हुआ था। इसकी प्रसिद्ध रचना है 'द हिस्ट्रीज' (430 ई.पू.)। इसे 'द रिसर्चेज' या 'द एन्क्वायरीज' भी कहा जाता है। इसकी प्रसिद्ध रचना 'हिस्ट्रीज' में यूनान-ईरान युद्ध का विस्तृत व रोचक वर्णन मिलता है। इतिहासकार **हेरोडोट्स** को रोमन दार्शनिक **सिसरो** ने **इतिहास का जनक/पिता** की संज्ञा दी।
- **इतिहास की प्रमुख परिभाषाएँ :**
  (i) विश्व का इतिहास 'स्वतन्त्र' चेतना के अलावा कुछ नहीं है- **हीगेल**
  (ii) इतिहास अपने आपको दोहराता है- **हीगेल** (जर्मनी का दार्शनिक)
  (iii) हम इतिहास से यहीं सबक लेते हैं कि आदमी इतिहास से कभी कोई सबक नहीं लेता- **हीगेल**
  (iv) इतिहास अपने आपको दोहराता है। पहले त्रासदी के रूप में व बाद में प्रहसन के रूप में -**कार्ल मार्क्स** (जर्मनी दार्शनिक, अर्थशास्त्री)
  (v) इतिहास साहित्य की शाखा नहीं हैं..... इतिहास विज्ञान है, न उससे कम न उससे ज्यादा-**जे.बी.ब्यूरी** (आयरलैण्ड)
  (vi) समस्त इतिहास समसामयिक इतिहास है- **बी. क्रोच**
  (vii) सभी इतिहास विचारों का इतिहास है-**आर.जी. कॉलिंगवुड**
  (viii) इतिहास, विज्ञान का एक अनोखा मोती है। जो भौतिक एवं आध्यात्मिक अशांतियों को शांत करता है तथा बाहरी और भीतरी अंधेरों को प्रकाशित करता है-**अबुल फजल**
  (ix) इतिहास उपन्यास से अधिक रूचिकर होता है-**डेविड ह्यूम**
  (x) इतिहास अभिजात तंत्रों की कब्रगाह है-**विल्फ्रेड परेटो**
  (xi) इतिहास जिसे लिखता है, वहीं इतिहास है- **जी. आर. एल्टन**
  (xii) इतिहास सभ्य समाज में रहने वाले मनुष्यों के कार्यो के अनुभव की कहानी है-**रेनियर**
  (xiii) जो आदमी इतिहास को याद नहीं रखते, उनको इतिहास को दोहराने पर दंड मिलता है-**शान्टायन**
  (xiv) इतिहास समाज में रहने वाले मनुष्यों के कार्यो एवं उपलब्धियों की कहानी है-**हेनरी पिरेन**

भारत का नामकरण

- भारत उप-महाद्वीप वास्तविक रूप से त्रिकोणकार या धनुषाकृति आकार का था। भारतवर्ष, जम्बूद्वीप, इंडिया, हिन्दुस्तान कहा गया, ये हमारे देश के विविध नाम प्राप्त होते हैं। विदेशी सर्वप्रथम सिन्धुतटवासियों के सम्पर्क में आये, इसलिए उन्होंने पूरे देश को ही **सिन्धु या इण्ड्स** नाम से पुकारा।
- महाभारत के रचयिता **वेदव्यास** के अनुसार महाराज दुष्यन्त के पुत्र सम्राट भरत के नाम पर 'भरत का देश' इस आशय से 'भारतवर्ष' नाम पड़ा। **ऐतरेय ब्राह्मण** के अनुसार, **'भरत एक चक्रवर्ती राजा** थे, जिन्होंने चार दिशाओं तक भूमि को जीतकर एक विशाल साम्राज्य का वरण किया एवं अश्वमेघ यज्ञों का आयोजन किया जिससे उनके नाम पर **'भारतवर्ष'** का नामकरण हुआ।

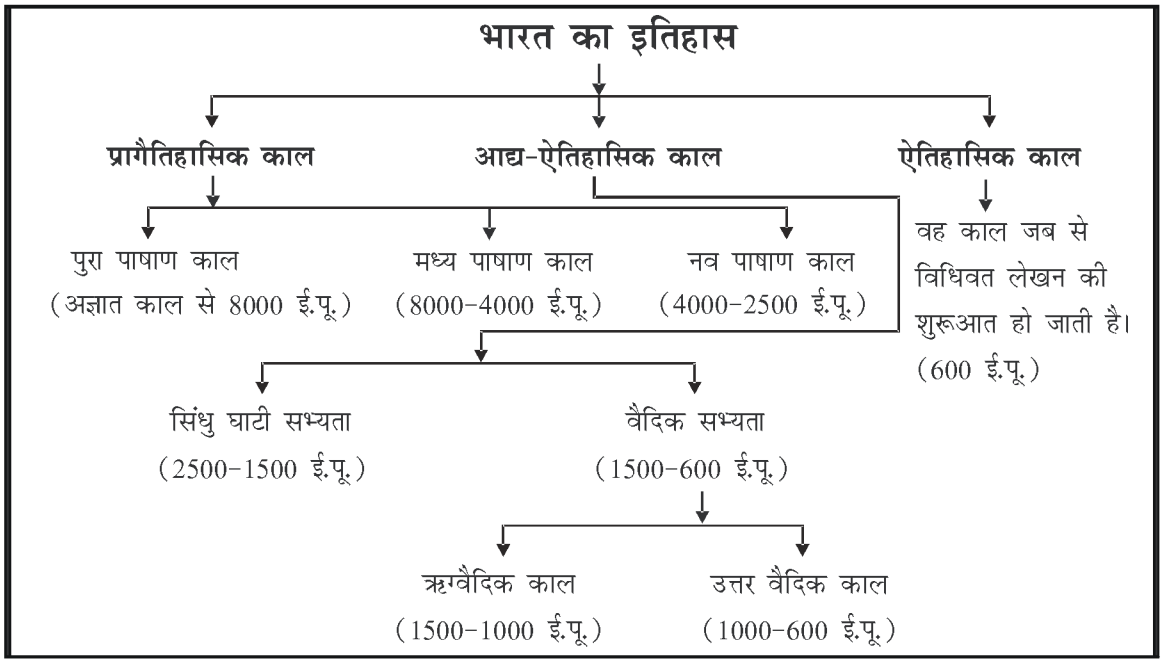
गया।

- **भगवत गीता** - चार्ल्स विल्किंस (1785)
  इसकी प्रस्तावना वारेन हेस्टिंग्स ने लिखी।
- **हितोपदेश** - चार्ल्स विलकिंस (1787)
- **अभिज्ञान शाकुंतलम्** - विलियम जोन्स (1789)
- **गीत गोविन्द** - विलियम जोन्स (1792)
- **लैला-मंजनू** - विलियम जोन्स
- **ताज-उल-मासिर** - इलियड एवं डावसन
- **नील दर्पण** - रेवरंड लॉग
- **योग वशिष्ट** - सर जॉन शोर
- **पंचतंत्र** - सर थॉमस नार्थ
- **पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी** - स्कॉफ
- **कथा सरित्सागर** - सी.एच. टानी
- **मृच्छ कटिकम्** - आर्थर राइडर
- **ह्वेनसांग की जीवनी (ह्वीली)** - बील
- **इत्सिंग का विवरण** - जापानी बौद्ध विद्वान तक्कुश ने 'ए रिकॉर्ड ऑफ बुद्धिस्ट रेलिजन' नाम से किया।
- **बाबरनामा** - बेवरिज, लीडेन, अर्सकिन
- **तारीख-ए-रशीदी (मिर्जा हैदर दौगलत)**- ई.डी. रोस
- **तजकिरातुल वाकयात** - सी. स्टूअर्ट
- **तहकीक-ए-हिन्द (अलबरुनी)**- एडवर्ड सचाऊ
- **तबकात-ए-नासिरी** - इलियट व ड्ऊसन
- **रेहला** - ली व गिब्स
- **भगवत गीता** - विलियम जोंस
- **स्टोरियो द मोगोर** - डब्ल्यू. इरविन
- **ट्रेवल्स इन इंडिया** - एक अंग्रेज सैनिक
- **मखजान-ए-अफगाना** - बी. डोर्न
- **तुजुक-ए-जहाँगीरी** - रोजर्स व बेवरिज
- **अकबरनामा (अबुल फजल)** - एच. बेवरिज
- **तकमील-ए-बाबरनामा (इनायत उल्लाह खान)**-ल्यूट चैमर्स
- **मुन्तखब-उल-तवारीख (बदायूंनी)** - रंकिन, लॉ, हेज
- **गुलशन-ए-इब्राहिमी (फरिश्ता)** - जॉन ब्रिज
- **आइना-ए-अकबरी** - By Blochamann
- **हर्षचरित** - कावेल और थॉमस
- **सी.यू.की.**- एस. वील व वाटर्स
- **रामायण (वाल्मीकि कृत)** - R.T.H. ग्रिफिथ (1870)
- **कुमार संभव** - R.T.H. ग्रिफिथ
- **4 वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद)** - R.T.H. ग्रिफिथ



Economist.com

2 प्रागैतिहासिक काल



अतीत काल की घटनाओं की स्थिति की जानकारी देने वाले शास्त्र को **इतिहास** कहा जाता है।

इतिहास शब्द : **इति + ह + आस** शब्दों से मिलकर बना है, जिसका अर्थ होता है- **'निश्चित रूप से ऐसा हुआ होगा'**।

इतिहास का काल विभाजन

1. **प्रागैतिहासिक काल :** इस काल की जानकारी पुरातात्त्विक सामग्री/स्त्रोतों से प्राप्त होती है।
2. **आद्य-ऐतिहासिक काल :** वह काल जिसकी जानकारी पुरातात्त्विक व लिखित सामग्री से प्राप्त होती है। परन्तु यह लिखित सामग्री वर्तमान में भी अपठनीय है।
3. **ऐतिहासिक काल :** वह काल जिसकी जानकारी लिखित सामग्री से प्राप्त होती है जिसे हम पढ़ भी सकते हैं और समझ भी सकते हैं।
   - **B.C (ई.पू.) :** 'बिफोर क्राइस्ट' (ईसा पूर्व)।
   - **A.D (ई.) :** 'एनो डॉमिनी' शब्द लैटिन शब्दों से बना है, जिसका अर्थ होता है-ईसा मसीह के जन्म के वर्ष से।

प्रागैतिहासिक काल (Lithic Age) :

मानव के प्रारंभिक काल के विषय में जो पुरातात्विक प्रमाण मिले हैं, उनमें पाषाण (पत्थर) से बने उपकरणों की अधिकता है, इसी कारण इसे पाषाण काल कहा जाता है। इन पत्थरों के औजारों का उपयोग आदिमानव द्वारा किया गया। लिथिक शब्द यूनानी भाषा के लिथोस शब्द से बना है जिसका अर्थ पाषाण है।

भारत के संदर्भ में पाषाण काल की अवधि 30,00,000 ई.पू. से 1000 ई.पू. तक मानी जाती है।

- भारत में प्राग इतिहास के जनक- भूतत्व सर्वेक्षक रॉबर्ट ब्रुश फुट
- पाषाण काल में 3000 ईसा पूर्व तक के मानवीय क्रियाकलापों को रखा जाता है। इसके बाद आद्य ऐतिहासिक काल में सैंधव सभ्यता व वैदिक सभ्यता आती है तथा इसके बाद ऐतिहासिक काल आता है। इसमें हमें लिखित साक्ष्य मिलने लग जाते हैं। भारत में इसकी शुरुआत 6वीं शताब्दी ई. पू. से होती है।

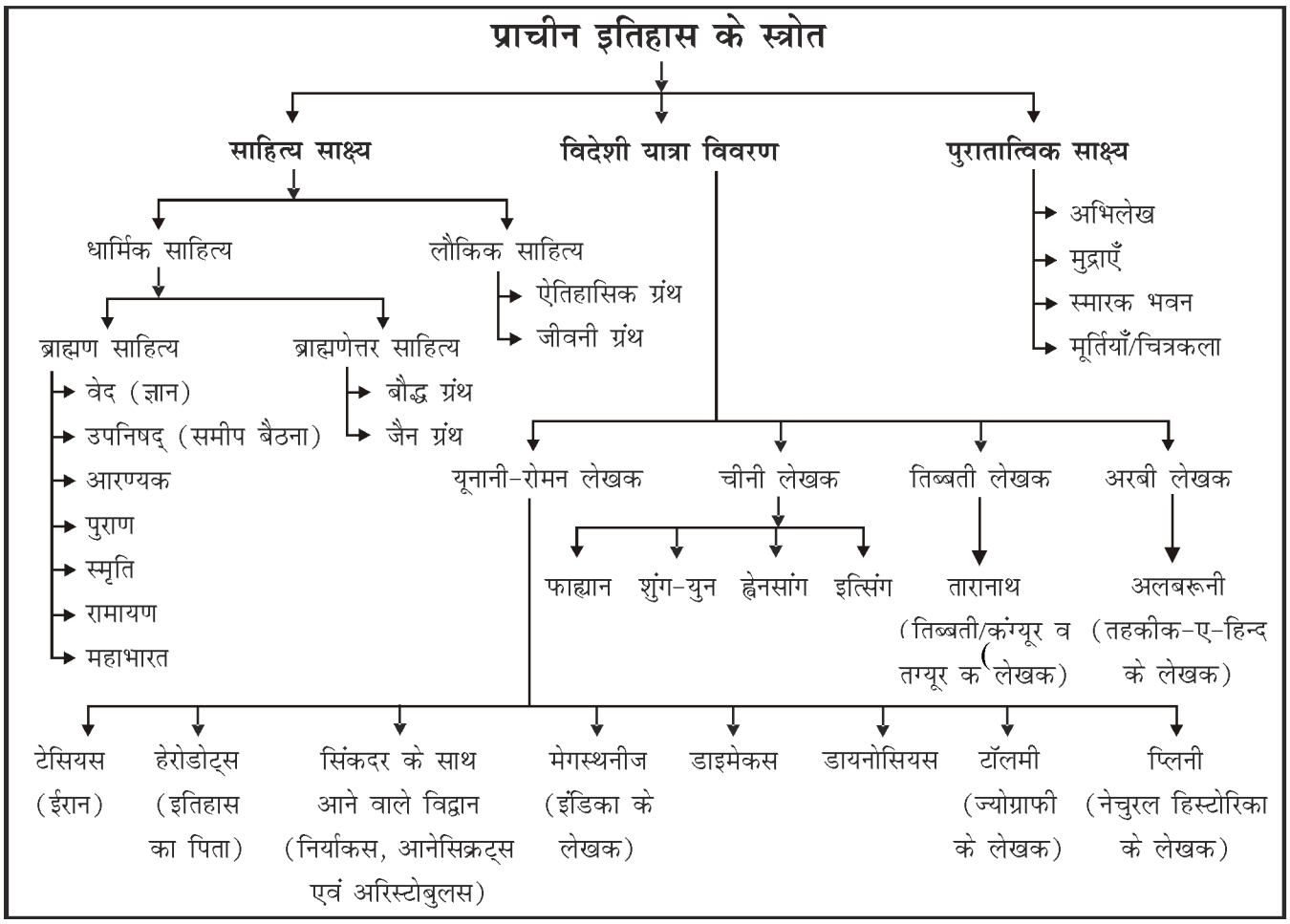
विशेषः-

- भारत में प्राग इतिहास का मुख्यालय **नागपुर** में है।
- रॉबर्ट ब्रुस फुट ने 13 मई, 1863 को मद्रास के पल्लवरम् से प्रथम पाषाण उपकरण खोजा जो कि क्वार्टजाइट (स्फटिक) पत्थर से निर्मित था और यह एक हैंडएक्स था।
- यूरेनियम डेटिंग के जनक **क्यूरी** है। वहीं कार्बन डेटिंग के जनक बिलर्ड लिबी है।
- भारत में प्रचलित पाषाण काल की शब्दावलियाँ फ्रांस से ली गई है।

मानव का उद्गम व विकास

- पुरातत्व की भाषा में मानव को एक औजार बनाने वाला प्राणी माना गया है। मानव का उद्भव प्रति नूतन काल में हुआ। अभी तक प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर यही कहा जा सकता है कि मानव की आद्य जन्म स्थली अफ्रीका महाद्वीप रहा है।

3 ऐतिहासिक स्त्रोत



ब्राह्मण साहित्य (धार्मिक)

ब्राह्मण ग्रंथों के अंतर्गत श्रुति ग्रंथ (वेद, ब्राह्मण, आरण्यक एवं उपनिषद्) व स्मृति ग्रंथ (वेदांग/सूत्र, स्मृति, रामायण, महाभारत, पुराण) आदि ग्रंथ आते हैं। वेदों से प्राचीन आर्यों के धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक जीवन व राजनीतिक जीवन की जानकारी मिलती है। इतिहास की जानकारी के लिए **ऋग्वेद** व **अथर्ववेद** उपयोगी ग्रंथ हैं।

वेद :

वेद शब्द संस्कृत भाषा की **विद्** धातु से बना है जिसका अर्थ है **जानना**। सामान्य रूप में इसका अर्थ **ज्ञान** होता है। वेदों की संख्या **चार** है- **ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद।** प्रारंभ में वेद श्रुति परम्परा पर आधारित थे। इनका संकलन **महर्षि कृष्ण द्वैपायन वेदव्यासजी** के द्वारा किया गया। वेदों को **अपौरुषेय** कहा जाता है अर्थात् ऐसा माना जाता है कि देवताओं द्वारा इनकी रचना की गई। इन चारों वेदों को **संहिता** भी कहा जाता है क्योंकि इनमें **श्लोकों का संग्रह** भी है। वेदों से आर्यों के भारत आगमन तथा उस काल की संस्कृति के बारे में जानकारी मिलती है।

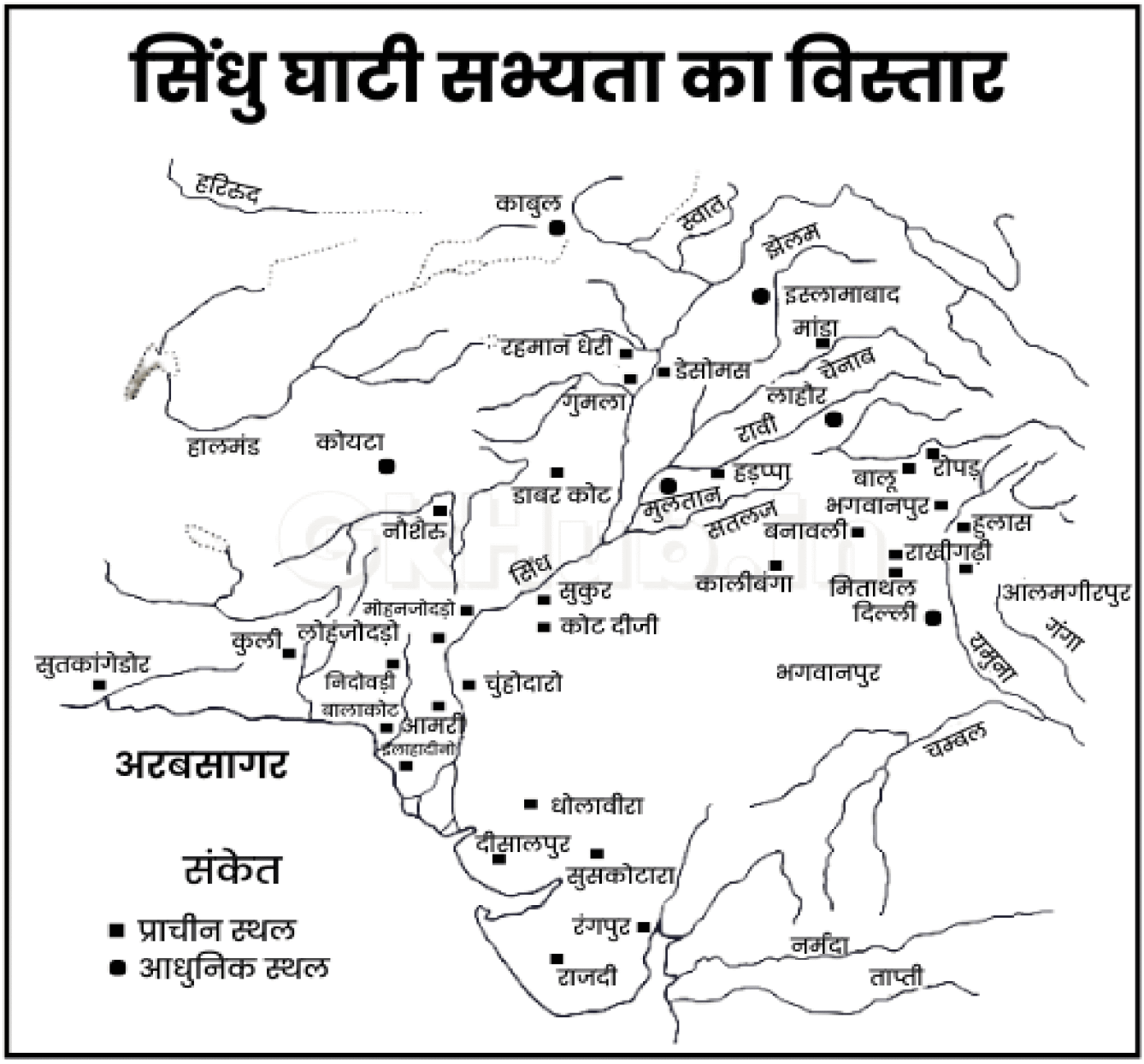
वेदों का ज्ञान ईश्वर द्वारा चार ऋषियों को दिया गया, ऋग्वेद का **अग्नि** को, यजुर्वेद का **वायु** को सामवेद का **आदित्य** व अथर्ववेद का **अंगिरा ऋषि** को ज्ञान दिया गया। वेदों का ज्ञान ऋषियों को समाधि की अवस्था में प्राप्त हुआ। वेदों के विषय निश्चित है **ऋग्वेद का विषय ज्ञान, यजुर्वेद का कर्म, सामवेद का उपासना** व **अथर्ववेद का विज्ञान** है।

ऋग्वेद (ऋत् + वेद) :

- **रचनाकाल** : 1500 ई.पू. से 1000 ई.पू.
- **रचनाक्षेत्र** : सप्तसैंधव प्रदेश
- **ऋत् का अर्थ** : नैतिक नियम
- **वेद का अर्थ** : पवित्र ज्ञान / जानना
  - **रचना :** संभवतया सप्त सैंधव क्षेत्र (सरस्वती नदी के तट पर)

का ज्ञान होता है। बसाढ़ से प्राप्त मिट्टी की मुहरों से व्यापारिक श्रेणियों का ज्ञान होता है।

सिंधु सभ्यता के प्रमुख स्थल



❑❑❑❑

अवि	भेड़
अष्टकर्णी	गाय
अदेवयु:	देवताहीन
अयज्वन	यज्ञ क्रिया न करने वाले
अयस	तांबा
अब्रात्य	अछूत
अचन्या	गाय के लिए प्रयुक्त
अस्तेय	चोरी
अवत	कुआँ
अनस	बैलगाड़ी
अनास:	बिना नाक वाले
ऋत या ऋतु	नैतिक सदाचार
गोला	गौर रक्षक, गौ समुदाय
गोमत	धनी धनाढ्य व्यक्ति
गोबला/गोवाल	भैंस
गोधूम	गेहूँ
गोघ्न, गोहन्ता	गाय का वध करने वाला

प्राचीन शब्द	अर्थ/वर्तमान प्रचलित शब्द
गव्य, गव्यति	चारागाह
गविष्टि	गायों की खोज (शाब्दिकअर्थ) युद्ध
गृहपति	परिवार का वयोवृद्ध व्यक्ति
ग्रामणी	गांव का मुखिया
मूजवन्त पर्वत	हिन्दूकुश पर्वत
उपल प्लक्षिणी	चक्की से आटा पीसने वाली
उर्दर	अनाज नापने वाले पाला
उर्वरा	जुते हुए खेत
कुर्मार	लोहार
कीनाश	हल चलाने वाले
करीष, शकृत	गोबर की खाद
कृष्ण अयस	लोहा
कुल्या	नहर
कुलप	परिवार या कुल का नेता
कुलाल	मिट्टी के बर्तन बनाने वाला (कुम्हार)
कैवर्त	मछुआरा
पर्जन्य	बादल
पणि	व्यापारी, गायों के लुटेरे
पेशस्कारी	वस्त्रों पर कढ़ाई करने वाली
सूप	भूसा उड़ाने के लिए छाज
सीता	हल से बनी रेखाऐं
पुर	विशिष्ट प्रकार के लकड़ी की चारदीवारी वाले पाषाण या चातु निर्मित दुर्ग
पुरचरिष्णु	दुर्गों को गिराने वाला यंत्र
पुरप	दुर्गपति
सीरी	बुनाई का काम करने वाली नारी
पथीकृत	अग्निदेव
पयस्	दूध
जन	कबीले के लोग (अनेक विशों का समूह)
जन या विश	वैदिक कबीले
जनस्य गोपा	राजा
हिरण्य	सोना
द्विज	जिसका जन्म दो बार हुआ हो (शाब्दिक अर्थ)
भीषक	वैद्य
स्थिवि	अनाज का कोठार
विश	अनेक ग्रामों का समूह (जनता)
विशपति	विश का सर्वोच्च अधिकारी
निष्क	गले का आभूषण
नियोग प्रथा	पति केन होने पर पति के अन्य निकट रिश्तेदार के साथ पुला के लिए सहवास
घृत	घी
तन्दुल	चावल
तसर	चरखा (हथकरघा)
दुहिता	दूध दुहने के कारण पुत्री को कहते थे
तक्षण	बढ़ई
बलि	राजा को स्वेच्छा से दी गई भेंट
बृक/उक्षन	बैल
यव	जौ
यक्ष्मा	तपेदिक
ब्रीही	चावल
स्पश:	गुप्तचर
चन्व	मरूस्थल
चान्यकृत	अन्न उत्पन्न करने वाला
वास	शरीर पर ऊपर पहने जाने वाला प्रमुख वस्त्रा
वापता	नाई
वाय/तंतुवाय	जुलाहा
वणिज	व्यापारी
वैदिक शब्द	वर्तमान शब्द
व्राजपति	चारागाह का अधिकारी/गाँव का प्रचान
नप्तृ	चचेरे भाई बहिन, भतीजे
लाँगल/वृक	हल
राष्ट्र	प्रदेश या राज्य क्षेला
रयि	संपत्ति, चाँदी का सिक्का
रक्षक	जन का सर्वोच्च अधिकारी
क्षोलिाय/क्षेलिाम	विद्वान ब्राह्मण

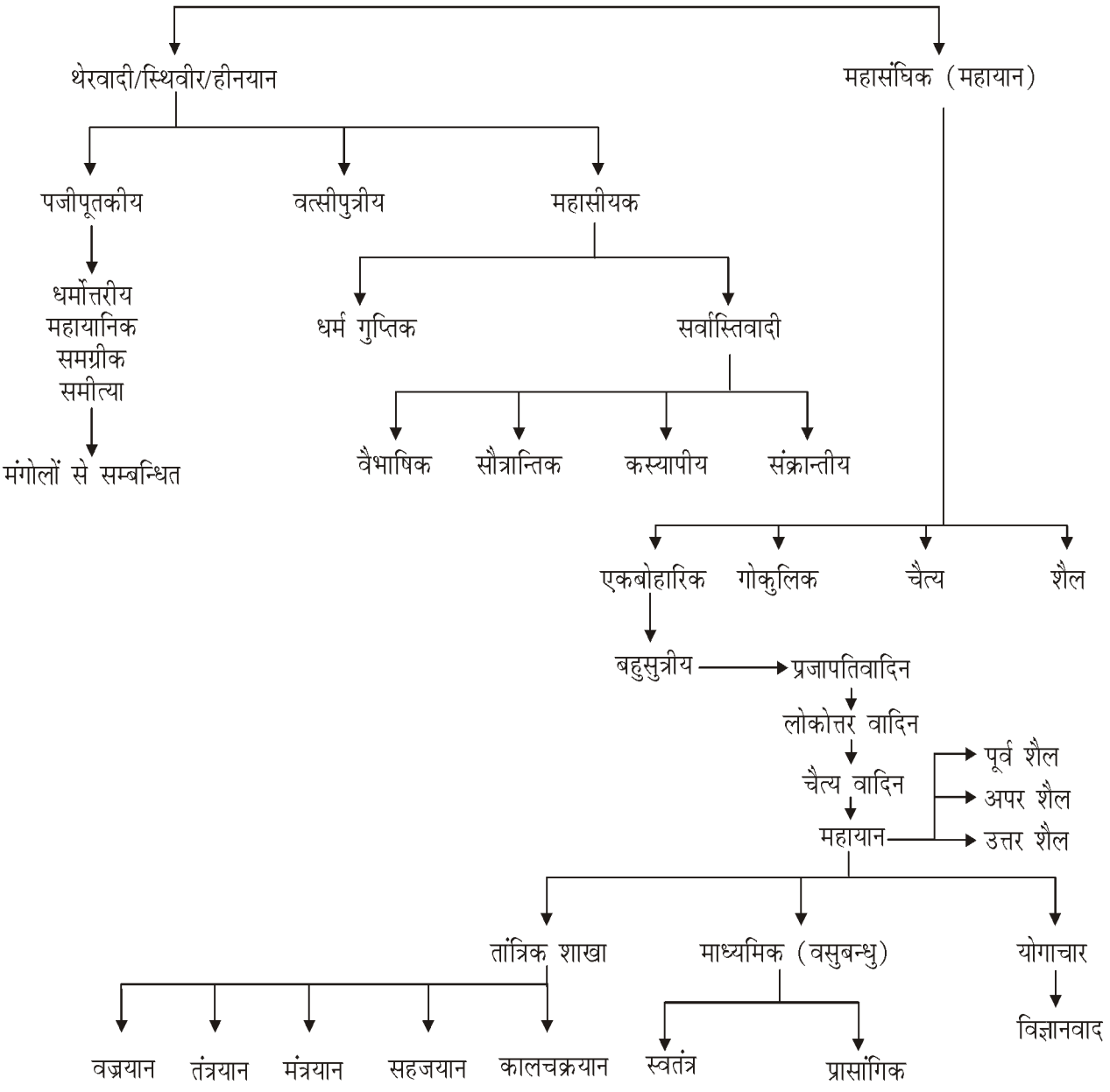
❑❑❑❑

- बौद्ध साहित्य में देव कोटि के चार लोक वालों का वर्णन मिलता है जिसमें पूर्व दिशा का स्वामी (धतरठ्ठ), पश्चिम दिशा का स्वामी (विरुपक्ख), दक्षिण दिशा का स्थायी (विरल्ह) व उत्तर दिशा का स्वामी (वेस्सवन) बताये गये है। बौद्ध धर्म के साहित्य के भाग और बलि शब्दों का प्रयोग भूमि कर के लिए किया गया है।

महात्मा बुद्ध के साथ शास्त्रार्थ करने वाले लोग :

- **निग्रोथ** - दीर्घनिकाय के अनुसार इनके 3000 शिष्य थे। इन्होंने महात्मा बुद्ध के साथ भिक्षु जीवन पर वाद-विवाद किया।
- **वच्छागोत** - बुद्ध के साथ गृहस्थ के मोक्ष अधिकार पर शास्त्रार्थ किया।
- **कुण्डलीय** - इसके और महात्मा बुद्ध के बीच वार्ता का विषय आरंभ था।
- **अजितो**- चेतन की 500 अवस्थाओं को विषय बनाकर महात्मा बुद्ध के साथ वाद-विवाद किया।
- **वरधारो** - बुद्ध से वार्ता का विषय 'चत्तारी धम्मपदानि' था। बौद्ध ग्रंथ उस समय प्रचलित 62 मतों का उल्लेख विरोधी होने के कारण इन्हें मिथ्या धारणाएँ कहा गया है। इसमें 18 मत ऐसे थे जो लोग व आत्मा आदि के विषय में अपना विचार प्रकट करते थे। शेष 44 मत लोक व आत्मा के अन्त में संबंध में अपना विचार प्रकट करते है।

बौद्ध धर्म में विभाजन



- चीनी यात्री इत्सिंग के विवरण के अनुसार एक बार बिम्बिसार ने स्वप्न में बौद्ध धर्म का भविष्य देखा था। उसने एक कपड़े का टुकडा

उल्लेख मिलता है। मध्यप्रदेश के जबलपुर में भेड़ाघाट के पास चौसठ योगिनी का मन्दिर है जहाँ 9वीं-10वीं शताब्दियों में कई देवी मूर्तियों का निर्माण किया गया था।

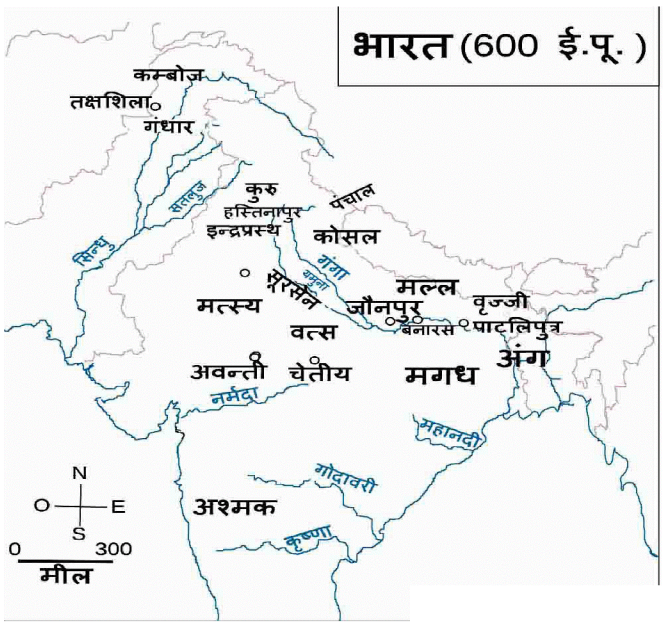
- सम्प्रति शाक्त उपासना के तीन प्रमुख केन्द्र है-कश्मीर, काञ्ची तथा असम स्थित कामाख्या। प्रथम दो श्रीविद्या के प्रमुख स्थल हैं जबकि अन्तिम कौल मत का प्रसिद्ध केन्द्र है।

सूर्य-पूजा :

- हिन्दू देवमण्डल में सूर्य का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान था जिनकी कल्पना 'जगत के प्रकाश के स्वामी' के रूप में की गयी है। कुछ विद्वान् सूर्य-पूजा की प्राचीनता प्रागैतिहासिक काल तक ले जाते हैं। हड़प्पा संस्कृति के विभिन्न पुरास्थलों की खुदाई में भी चक्र, स्वास्तिक, किरण-मण्डल आदि कुछ ठीकरों पर खुदे हुए मिले हैं जिन्हें बाद में सूर्य-पूजा से संबद्ध कर दिया गया।
- ऋग्वेद में सूर्य की अनेक विशेषताओं का उल्लेख मिलता है। बताया गया है कि वह एक **श्वेत-अश्व** है जिसे **उषा** लाती है। वह अपने रथ पर सवार होकर आकाश में परिभ्रमण करता है। उसके रथ में एक या अधिक अश्व (अधिकतम सात) रहते हैं। इसी आधार पर बाद में उसे 'भगवान सप्त सप्ति' कहा गया है। **ऋग्वेद** के अनुसार **सूर्य देवों का अनीक** (सेना प्रमुख), **चराचर की आत्मा, मनुष्यों के सत्-असत् कार्यों का द्रष्टा**, समस्त ज्योतियों में सर्वोत्तम एवं विश्वकर्मा है। उत्तर वैदिक साहित्य- संहिता, ब्राह्मण, उपनिषद्, गृह्य एवं धर्म सूत्रों आदि में हम सूर्य की पूजा का उल्लेख प्राप्त करते है। कालान्तर में सूर्य की पूजा करने वालों का एक अलग सम्प्रदाय गठित हो गया जिसे **सौर सम्प्रदाय** कहा जाता है। इसके अनुयायी मस्तक पर लाल चन्दन लगाते हैं, लाल पुष्पों की माला पहने हैं तथा **गायत्री मंत्र** का जाप करते है।
- लोकार्क, मार्तण्ड, वरुणस्वामी, भगवान सप्तसप्ति आदि सूर्य के प्रचलित नाम है। सूर्य के सारथी का नाम अरुण है चूंकि उनके रथ को सात घोड़ों द्वारा प्रदर्शित किया जाता था इसीलिए सूर्य सप्तसप्ति कहलाये। सूर्य को चित्ररथ भी कहा जाता है जो कि शालंकायन राजवंश के संरक्षक देवता थे। सूर्य को मूर्तिकला में रथारुढ़ दिखाया जाता है जिनके रथ को मथुरा कला में 4 और गुप्त युग में 7 घोड़ों द्वारा प्रदर्शित किया जाने लगा। प्रारंभिक भारतीय मूर्तिकला में एक रिक्त स्थान रखा जाता था जो सूर्य का प्रतीक था। प्राचीनतम सूर्य की मूर्ति भरहूत (मध्यप्रदेश) से प्राप्त हुई।
- बोधगया, अनन्त गुफा और भाजा गुफा से प्राचीनतम सूर्यमूर्ति का अस्तित्व प्रमाणित हुआ है लेकिन भाजा की मूर्ति अब कलाविदों ने राजा मान्धाता की मूर्ति स्वीकार की है। शाम्ब ने ईरानी पुरोहित मग को भारत लाया। उसने चंद्रभागा नदी पर सूर्य का पहला मंदिर बनवाया। मग पुरोहितों ने भारत में सूर्य पूजा को लोकप्रिय बनाया। सूर्य पूजा के उपलक्ष्य में साम्बपुरयात्रा उत्सव मनाया जाता है। मान्यता है कि सूर्य का प्रकाश कोढ़ रोग से मुक्ति प्रदान करती है। कृष्ण के पुत्र शाम्ब, हर्षवर्धन का दरबारी मयूर तथा गंगवंशी राजा नरसिंहदेव ने सूर्य उपासना कर कोढ रोग से मुक्ति पायी थी।

राजपूत काल में निर्मित प्रमुख सूर्य मन्दिर -

- मोढेरा (गुजरात) के सूर्य मन्दिर का निर्माता राजा भीमदेव-I था। उसने 1026 ई. में यहाँ पर सूर्यकुण्ड का भी निर्माण करवाया।
- ओसियाँ और सिरोही (राजस्थान) के सूर्य मन्दिर का निर्माण वत्सराज प्रतिहार शासक ने करवाया।
- कश्मीर-यहाँ ललितादित्य मुक्तापीड ने मार्तण्ड सूर्य मन्दिर बनवाया।
- मुल्तान (पाकिस्तान) के सूर्य मन्दिर का उल्लेख अलबरुनी, ह्वेनसांग, अबू-जईद, अल-मसूदी करता है। इस मन्दिर में सोने की मूर्ति थी।
- खजुराहो (मध्यप्रदेश)- यहाँ का चित्रगुप्त मन्दिर सूर्य को ही समर्पित है। इसी मन्दिर में 11 सिरों वाले विष्णु की भी मूर्ति है।
- ऐहोल (कर्नाटक) - यहाँ चालुक्य शासको ने सूर्य का लाढ खाँ मन्दिर बनवाया।
- तंजौर-सुदूर दक्षिण में स्थित एकमात्र सूर्य मन्दिर तंजौर में मिलता है।
- इसके अलावा कोणार्क (ओडिशा) व मंदसौर (मध्यप्रदेश) में भी प्रसिद्ध सूर्य मन्दिर हैं।
- प्राचीन भारतीय शिल्प में सूर्य को प्रतीक स्वरूप रिक्त सिंहासन के रूप में दर्शाया गया है।



❑❑❑❑

8 महाजनपद काल, हर्यंक व नन्द वंश

- भारत में महाजनपदों का उदय छठीं सदी ई.पू. में हुआ। क्योंकि उस समय **बिहार** व उसके आस-पास के क्षेत्रों में **लोहे** का उत्पादन बड़े पैमाने पर हुआ।
- जैन ग्रंथ भगवती सूत्र व बौद्ध ग्रंथ अंगुत्तर निकाय में 16 महाजनपदों की सूची हमें प्राप्त होती है। बौद्ध-ग्रन्थ अंगुत्तरनिकाय में सोलह महाजनपदों का उल्लेख किया गया है। काशी, कोशल, अंग, मगध, वज्जि, मल्ल, चेदि, वत्स, कुरू, पांचाल, मत्स्य, शूरसेन, अश्मक, अवन्ति, गांधार, कम्बोज। जैन धर्म ग्रन्थ भगवती सूत्र के अनुसार 16 महाजनपद अंग, बंग, मगह (मगध) मलय, मालवा, अच्छ, वत्छ (वत्स), कोच्छ (कच्छ) लाढ़ (लाट), पाढ़ (पाण्ड्य या पौण्ड्) वज्जि, मोलि (मल्ल), काशी, कोशल, अवाह, संभुत्तरा (संहोत्रा)। अंग, मगध, वत्स, वज्जि, काशी और कोशल, ऐसे 6 महाजनपद हैं, जो कि अंगुत्तरनिकाय एवं भगवतीसूत्र में समान है। तमिल ग्रंथ शिल्पादिकारम में तीन महाजनपद मगध, वत्स एवं अवन्ति का उल्लेख हुआ है। पाणिनी की अष्टाध्यायी में 40 जनपदों के नाम हैं। इनमें से 22 जनपदों का उल्लेख विशेष रूप से हुआ है। महाभारत में 250 जनपदों का उल्लेख है।
- महावस्तु नामक ग्रन्थ में भी सोलह महाजनपदों का उल्लेख है, लेकिन उसके अनुसार अंगुत्तरनिकाय में वर्णित गांधार और कम्बोज के स्थान पर शिवि (पंजाब या राजपूताना) एवं दशार्ण (मध्य भारत) महाजनपद है। इनमें 4 शक्तिशाली महाजनपद मगध, कोशल, वत्स एवं अवंतिका थे। बुद्धकालीन चार शक्तिशाली राजतंत्र कोशल, मगध, वत्स एवं अवन्ति थे। 16 में से 10 महाजनपद गंगा नदी घाटी क्षेत्र में थे।

इस काल में 2 प्रकार के राज्य थे-

1. **राजतंत्र** : अध्यक्ष 'राजा'
2. **गणतंत्र** : राज्य 'संघ' का (इनकी संख्या 10 थी)

- भारत का सबसे प्राचीन एवं सबसे ताकतवर महाजनपद **मगध** था।
- दक्षिणी भारत में **गोदावरी** नदी के तट पर स्थित भारत का एकमात्र जनपद **अश्मक** था।
- रामायण और महाभारत युग में प्रसिद्ध भारत का महाजनपद **कौशल** था।
- भारत से बाहर स्थित एकमात्र महाजनपद **कम्बोज** था जो वर्तमान में पाकिस्तान के **राजपुर जिले** में स्थित है।

महाजनपद व राजधानियाँ:

- पालिभाषा में रचित बौद्ध ग्रन्थ अंगुत्तरनिकाय में वर्णित महाजनपदों में वज्जि एवं मल्ल महाजनपद गणतन्त्रात्मक थे। अंगुत्तरनिकाय में वर्णित शेष महाजनपद अंग, मगध, काशी, कोशल, वत्स, चेदि, कुरू, पांचाल, मत्स्य, शूरसेन, अवन्ति, गान्धार, कम्बोज एवं अश्मक राजतन्त्रात्मक प्रणाली के महाजनपद थे।

अंगुत्तर निकाय में दिये गये 16 महाजनपद

महाजनपद	:	**राजधानी**
काशी	:	वाराणसी
कोशल	:	श्रावस्ती/अयोध्या (साकेत)
अंग	:	चम्पा
मगध	:	गिरिव्रज/राजगृह
वत्स	:	कौशाम्बी
वज्जि	:	विदेह व मिथिला
मल्ल	:	कुशीनारा व पावा
अवन्ति	:	उज्जयिनी व माहिष्मति
चेदि	:	सोत्थिवती (शुक्तिमति)
अश्मक	:	पोटन (पोटली)
कुरू	:	इन्द्रप्रस्थ
पांचाल	:	उत्तरी पांचाल - अहिच्छत्र दक्षिणी पांचाल - कांपिल्य
मत्स्य	:	विराट नगर
सूरसेन	:	मथुरा
गांधार	:	तक्षशिला
कम्बोज	:	हाटक अथवा राजपुर

1. **मगध** : विस्तृत विवरण मगध साम्राज्य में देखें।
2. **अंग** : इसकी राजधानी चम्पा थी, (भागलपुर के निकट गंगा और मालिनी के संगम पर) यह मगध के पूर्व में था, दोनों जनपदों के मध्य चम्पा नदी बहती थी। मगध नरेश बिम्बिसार ने अंग नरेश ब्रह्मदत्त को युद्ध में पराजित कर उसे मार डाला और अंग को मगध में मिला लिया। अंग की राजधानी चम्पा नगरी छठी शताब्दी में श्रेष्ठतम व्यापारिक केन्द्र थी। पूर्व का सबसे प्रमुख एवं शक्तिशाली महाजनपद।
3. **कोशल** : इसका विस्तार उत्तर में नेपाल की तराई से लेकर दक्षिण में सर्पिका/स्यन्दिका नदी तक तथा पश्चिम में गोमती नदी से लेकर पूर्व में गण्डक नदी तक था। सरयू नदी के कारण दो विभाग- उत्तरी कोशल व दक्षिणी कोशल थे। उत्तरी कोशल की आरम्भिक राजधानी श्रावस्ती (वर्तमान सहेतमहेत, उत्तरप्रदेश) थी। परन्तु कुछ समय पश्चात नई राजधानी साकेत (अयोध्या)बना ली गई। दक्षिणी कोशल की राजधानी कुशावती थी। बुद्ध के समय में कोशल का राजा प्रसेनजित था। कोशल के अन्य राजाओं के नाम हिरण्यनाभ, महाकोशल, शुद्धोदन, विदुधान आदि थे। मगध नरेश अजातशत्रु ने कोशल को मगध में मिला लिया।

मध्यकालीन भारत

1 इस्लाम का उदय एवं अरब आक्रमण

इस्लाम धर्म का उत्थान

- **प्रवर्तक** - मुहम्मद साहब
- **जन्म** - 570 ई., मक्का (सऊदी अरब) में
- **पिता**- अब्दुल्ला, **माँ** - अमीना
- **बचपन का नाम** - अबू-अल-कासिम
- **खुदाई इलहाम** (ज्ञान प्राप्ति) - हीरा नामक गुफा में 40 वर्ष की अवस्था में। जवल अन नूर (मक्का) पहाड़ी में
- **अनुयायी**- उम्मत
- **उपनाम** - पैगम्बर (आकाश से पैगाम लाने वाले), **नबी** (सिद्ध पुरुष), **रसूल** (ईश्वर के दूत), हबीब (प्रिय), अल-अमीन (विश्वसनीय)
- **कबिला**- कुरैश कबीला की बानू/बनी हाशिम शाखा के थे।
- **प्रथम उपदेश**- पत्नी **खदीजा** (40 वर्षीय धनी विधवा) को दिया जो उनकी पहली शिष्या थी।
- **वफात/मृत्यु** - 632 ई.
- **नाट-ए-मुहम्मदी**- बरनी द्वारा संकलित मुहम्मद साहब की जीवनी
- इस्लाम धर्म के प्रवर्तक पैगम्बर 'मुहम्मद साहब' थे। उनके पिता **अब्दुल्ला** तथा माता **अमीना** कुरैश नामक कबीले से संबंधित थे। बचपन में ही माता-पिता का निधन हो गया जिससे पालन-पोषण उनके चाचा **अबु तालीब** के द्वारा किया गया। बड़े होने पर चाचा के साथ रहकर व्यापार किया तथा **सीरिया** की व्यापारिक यात्रा भी की। खदीजा नामक एक विधवा स्त्री ने उन्हें अपना व्यापारिक-प्रतिनिधि नियुक्त किया। कालान्तर में मुहम्मद से उन्होंने विवाह कर लिया।
- मुहम्मद साहब प्राय: मक्का के समीप हीरा नामक पहाड़ी गुफा में ध्यान लगाते थे। यहीं 40 वर्ष की अवस्था में जिब्राईल ने उनको अल्लाह का पैगाम सुनाया। उनको यहीं ईश्वर का संदेश मिला कि, "अल्लाह के अतिरिक्त कोई दूसरा नहीं है, मुहम्मद उसके पैगम्बर है।" उन्हें यह आत्मज्ञान हुआ कि वह अल्लाह के पैगम्बर हैं और उन्होंने अपने को नवी (पैगम्बर) और रसूल (ईश्वर का दूत) घोषित कर दिया। उनमें से अल्लाह की बेटियों के रूप में लाट, मानत और उजा की पूजा प्रमुख थी और केवल हाबल की एक मूर्ति पूर्ण थी। उसकी स्थापना अब्राहम और इस्माइल ने की थी। हज की धार्मिक क्रियाएँ भी काबा में नहीं की जातीं बल्कि उसके इर्द-गिर्द की उस भूमि में की जाती है जिसे हम हातिम पुकारते हैं। मुहम्मद साहब राजनीति एवं धर्म दोनों के प्रधान थे। पैगम्बर अपने अनुयायियों को मरने से पहले मृत्यु का आनन्द लेने का उपदेश देते थे। बुल्जले हेग ने इस्लाम के उदय को इतिहास के चमत्कारों में से एक माना है।
- धर्म प्रचार में मुहम्मद साहब का लोगों ने विरोध भी किया जिससे विवश होकर उन्हें 16 जुलाई, 622 ई. को मक्का से **यसरीब** जाना पड़ा। यसरीब ही **मदीन तुन्नबी (नबी का शहर)** या **मदीना** कहलाया। इसी घटना को हिजरत कहते हैं तथा यहीं (622 ई.) से **हिजरी संवत्** की शुरुआत मानी जाती है।
- इस्लाम के अनुयायियों के लिए तीन मौलिक क्रियाएँ निर्धारित की- सुनन्त, हलाल, दफन।

इस्लाम धर्म की प्रमुख शिक्षाएँ :

1. मूर्ति पूजा का विरोध करना चाहिए।
2. माता-पिता गुरुजनों व फकीरों का सम्मान करना चाहिए।
3. खुदा एक है तथा सभी मनुष्य उसके बंदे है।
4. ब्याज लेना, जुआ खेलना, शराब पीना व सुअर का मांस खाना वर्जित है।
5. दु:खी एवं असहाय व्यक्तियों की सहायता करनी चाहिए।
6. गुलाम के साथ सहानुभूति रखनी चाहिए।
7. बहु विवाह में विश्वास।

इस्लाम धर्म के पाँच आधार :

- मत का उच्चारण, नमाज, जकात, रमजान के महीने में जकात रखना, हज जीवन में एक बार करना।

इस्लाम धर्म के प्रमुख सिद्धांत :

- एक ईश्वर में विश्वास, फरिश्ते में विश्वास करना, कुरान में विश्वास करना, देवदूतों में विश्वास करना, निर्णय-दिवस, स्वर्ग और नरक में विश्वास। प्रत्येक मुसलमानों को निम्न छ: नियमों का पालन करना चाहिए
  1. रमजान के महीने में रोजा रखना
  2. दिन में पाँच बार नमाज पढ़ना
  3. आय का चौथाई भाग खर्च करना
  4. कलमा पढ़ना
  5. जीवन में कम से कम एक बार हज करना
  6. प्रत्येक मुसलमानों को जिहाद के लिए तैयार रहना चाहिए।
- हजरत मुहम्मद साहब **तुर्कियों** के पहले मुखिया थे। उन्होंने अपने जीवनकाल में सभी प्रकार के कार्य जैसे पैगम्बर का कार्य, कानूनी कार्य, न्याय संबंधी कार्य, सेनापति के कार्य व शासक का कार्य किये। इसी कारण **इस्लाम का प्रथम शासक**

4 मध्यकालीन यात्री एवं उनके ग्रंथ

मार्कोपोलो (1292–93 ई.) :

- इतावली यात्री यह दक्षिण भारत के पाण्ड्य राज्य का भ्रमण करने पहुँचा उस समय पाण्ड्य नरेश मारवर्मन कुलशेखर शासक थे। अत: यह इनके दरबार में आया, इसने काकतीय रानी रूद्राम्बा तथा पाण्ड्य राज्य की राजधानी मालाबार का उल्लेख किया है जो मोती व्यापार के लिए प्रसिद्ध थी। इसे **मध्यकालीन यात्रियों का राजकुमार** कहा गया है। मार्कोपोलो भारतीयों की इस बात के लिए आलोचना करता है कि ''उनका अधिकांश पैसा घोड़े खरीदने में खर्च हो जाता है।'' यह उल्लेख करता है की अदरक और दाल-चीनी बहुत बड़ी मात्रा में पाण्ड्य देश में उत्पन्न होते थे।

फादर-एन्थोनी मोंसेरात :

- **पुस्तक**- कमेण्ट्रिज, पुर्तगाली फादर मोंसेरात फादर एक्वाविवा के साथ 1578 ई. में मुगल सम्राट अकबर के दरबार में आया था।
- उसने अकबर के चरित्र एवं व्यक्तित्व का विशद वर्णन किया है। अकबर ने फादर मोंसेरात को शाहजादा **मुराद** का शिक्षक नियुक्त किया।
- मोंसेरात को काबुल अभियान के समय अकबर के साथ जाने का मौका मिला, पादशाह, शाहजादों, अमीरों के अलग-अलग बाजारों (उर्दू) का वर्णन किया।
- उसने बालनायी संप्रदाय का जो विवरण प्रस्तुत किया है वह विशेष रूप से उल्लेखनीय है। स्वयं अकबर **'नंगे पांव व खुले बाल'** इस सम्प्रदाय के प्रमुख संत के दर्शन करने गया।
- फादर मान्सरेट जिसने सूरत से आगरा तक की यात्रा की थी और लाहौर से काबुल की यात्रा में अकबर के कारवां के साथ था, ने जो कुछ देखा उसका निचोड़ इन शब्दों में दिया है:- (भारत के) नगर दूर से आकर्षक दिखते हैं, लेकिन अंदर पहुँचने पर जब तंग गलियाँ और रैलेपेल करती भींड़ पर नजर जाती हैं, लेकिन अंदर पहुँचने पर जब तंग गलियाँ और रैलेपेल करती भीड़ पर नजर जाती है तो उनकी सारी भव्यता खत्म हो जाती है। घरों में खिड़कियाँ नहीं है। अमीरों के घरों की चारदीवारियों के अन्दर, बगीचे, तालाब और फव्वारे होते हैं, लेकिन बाहर से आँखों को अच्छीं लगने वाली कोई चीज दिखाई नहीं देती। आम लोग झौपड़ियों में रहते हैं। एक नगर को देख लेने का मतलब है सबको देख लेना। सबसे नया राजधानी नगर फतेहपुर सीकरी अपनी स्थापना के कुछ ही वर्ष बाद उजड़ चुका था।

राल्फ फिंच (1583–91 ई.) :

- यह फतेहपुर सीकरी और आगरा पहुँचने वाला पहला अंग्रेज व्यापारी था। इसने भारत के विभिन्न भागों का भ्रमण करते हुए अनेक स्थानों का अवलोकन किया। यह मुगल शासक अकबर के शासन काल में भारत आया था।
- इसने फतेहपुर सीकरी व आगरा दोनों शहरों को लंदन से बड़े और अधिक आबादी वाला बताया।
- बुरहानपुर व बनारस सूती कपड़े के लिए तथा बंगाल अफीम के लिए प्रसिद्ध था, जबकि पटना के पास सोने की खान थी। इसने स्वयं एक बाल विवाह बुरहानपुर में देखा था, साथ ही सती प्रथा का भी उल्लेख।

विलियम हॉकिन्स (1608–11 ई.) :

- **पुस्तक**- Early Travels, यह जहाँगीर के दरबार मे ब्रिटिश राजा जेम्स प्रथम का राजदूत था जो हेक्टर नामक जहाज से भारत आया। यह ब्रिटिश राजा जेम्स-I का पत्र अकबर के लिए लेकर आया था।
- परन्तु इसके पहुँचने तक अकबर की मृत्यु हो चुकी थी और जहाँगीर बादशाह बन चुका था। अत: यह जहाँगीर के दरबार में उपस्थित हुआ। सम्राट जहाँगीर ने हॉकिन्स का यथोचित सम्मान किया।
- हॉकिन्स फारसी का अच्छा जानकार था। अत: इसके द्वारा जहाँगीर से फारसी में बात की गई। जहाँगीर ने हॉकिन्स को 400 का मनसब व फिरंगी खाँ की उपाधि प्रदान की। यह भारत में अंग्रेजों के व्यापारिक अधिकारों की सुरक्षा के लिए भारत आया था। यह शाही दरबार में 1608 से 1611 ई. **(तीन वर्ष)** तक रहा।

सर टॉमस रो (1615–1619 ई.) :

- जहाँगीर के दरबार में आने वाले दूसरे अंग्रेज शिष्टमंडल के नायक सर टॉमस रो अपने गुरु एडवर्ड टैरी के साथ यहाँ लगभग तीन वर्ष तक रहा।
- माण्डू और अहमदाबाद की यात्रा के दौरान यह जहाँगीर के साथ रहा। 'पूर्वी द्वीपों की यात्रा' नामक विवरण में इसने मुगल दरबार के षड्यंत्र एवं धोखाधड़ी का वास्तविक विवरण प्रस्तुत किया था।
- इसने मुगल सम्राट जहाँगीर से भारत में अंग्रेज फैक्ट्री स्थापित करने का कानूनी अधिकार प्राप्त किया।
- वह बादशाह का एक फरमान लेकर इंग्लैण्ड लौटा कि मुगल दरबार में अंग्रेजों का स्वागत किया जाता रहेगा। उसके विवरण से जहाँगीर के धर्म निरपेक्ष दृष्टिकोण को जानकारी मिलती है जिसके तहत वह कहता है कि वह सभी धर्मों से संतुष्ट था और धर्म परिवर्तन को नापसंद करता था। उसने उल्लेख किया है कि **एक साधु जिसे कोई सफाई पसंद आदमी छूना भी पसंद नहीं करेगा उसे जहाँगीर ने गले से लगाया, पिता कहकर संबोधित किया।**

खालिसा-भू क्षेत्रों से लगान राज्य द्वारा वसूल किया जाने लगा। अलाउद्दीन ने न तो **मुक्ता-प्रथा** समाप्त की और न **खूती प्रथा** (जमींदारी प्रथा)। उसने केवल स्वामियों के विशेषाधिकार को समाप्त कर दिया।

- अलाउद्दीन ने राजस्व व्यवस्था से भ्रष्टाचार और लूट को खत्म करने के लिए एक नये विभाग **दीवान-ए-मुस्तखराज** की स्थापना की। भूमि की पैमाइश कराकर सरकारी कर्मचारियों द्वारा लगान वसूल करने की व्यवस्था सर्वप्रथम अलाउद्दीन ने आरंभ की।
- **जमींदार:**- सर्वप्रथम **अमीर खुसरो** ने जमींदार शब्द का प्रयोग किया है। बरनी ने उनको 'खुत' कहा है। वहीं उनको देश के विभिन्न भागों में **मुकद्दम, चौधरी, देशमुख, देशपाण्डे एवं तालुकदार** कहा जाता था। जमींदार अधिकतर हिन्दू थे। अलाउद्दीन खिलजी ने खुत, मुकद्दम एवं चौधरी के विशेषाधिकारों पर चोट की और **किस्मते खूती** एवं **हुकूक खूती** को अवैध घोषित किया। उसके इस प्रयास को बरनी यह कहकर तर्कसंगत ठहराता है कि, "अलाउद्दीन खिलजी का मकसद कमजोरों पर ताकतवरों के करों का बोझ पड़ने से रोकना था। बरनी के अनुसार इसका परिणाम यह निकला कि **अब वह घोड़ों पर नहीं चढ़ सकते थे, पान की गिलौरियाँ नहीं दबा सकते थे और वे इतने गरीब हो गये कि उनकी बीवियों को मुसलमानों के घर जाकर काम करना पड़ता था।**

अलाउद्दीन खिलजी के द्वारा बनाए गए स्थापत्य कला के नमूने

- **अलाई दरवाजा (दिल्ली) :** गुम्बद का सर्वप्रथम प्रयोग इसी इमारत में किया गया। इसका गुम्बद प्रारंभिक तुर्की कला का श्रेष्ठ नमूना है।
- **हौज-ए-खास (दिल्ली)**
- **जमातखाना मस्जिद (दिल्ली)** पूर्णरूप से इस्लामिक पद्धति से निर्मित पहली मस्जिद
- **सीरी का किला (दिल्ली) :** सीरी फोर्ट का निर्माण दिल्ली में करवाया। इसमें 1000 खंभों वाले महल (हजार सितुन) का निर्माण करवाया।

दरबारी विद्वान :

- **अमीर खुसरो- जन्म-** 1253 ई. (इटावा, उत्तरप्रदेश), **उपनाम-** तूतिया-ए-हिन्द (भारत का तोता), **आविष्कार-** तबला, सितार
- अमीर खुसरो शेख निजामुद्दीन औलिया के परम शिष्य थे तथा एक सूफी संत भी थे। अमीर खुसरो ने बलबन से लेकर गयासुद्दीन तुगलक तक 8 सुल्तानों का शासनकाल देखा।
- इनके द्वारा खजाइन-उल-फुतूह, तुगलक नामा, तारीखे अलाई, मिफ्ताह-उल-फुतूह, किरान-उस-सादेन, देवलरानी आशिका आदि ग्रंथों की रचना की गई।
- **अमीर हसन देहलवी** - भारत का सादी कहा जाता है।
- अलाउद्दीन खिलजी की मृत्यु 5 जनवरी, 1316 को हुई। मलिक काफूर ने **खिज्र खाँ** व **शादी खाँ** को गिरफ्तार करवाकर के **ग्वालियर के दुर्ग** में अंधा करवा दिया तथा **तीसरा पुत्र मुबारक खाँ** को भी बंदी बनाकर कैदखाने में डाल दिया।
- काफूर ने अलाउद्दीन के अल्पवयस्क पुत्र शहाबुद्दीन उमर को शासक बनाया तथा स्वयं उसका **संरक्षक** बना। मलिक काफूर ने सम्पूर्ण प्रशासन अपने अधिकार में ले लिया।
- मलिक काफूर ने नपुंसक होने के उपरान्त भी अलाउद्दीन की विधवा पत्नी के साथ निकाह किया। मलिक काफूर के 35 दिन के शासन के उपरांत अलाउद्दीन के विश्वासपात्रों ने **मुबारक खाँ** को कैदखाने से बाहर निकाला। मुबारक खाँ ने मलिक काफूर की हत्या कर दी। अमीर खुसरो के अनुसार, "काफूर ने तलवार एवं नमक की शपथ ली थी लेकिन जब नमक, तलवार बन गया तो उसका सर काट डाला। तत्पश्चात् मुबारक 64 दिनों तक शिहाबुद्दीन उमर का संरक्षक बन शासन किया। अन्त में वह अप्रैल 1316 में उमर को नेत्रहीन कर स्वतंत्र रूप से शासक बना। मुबारक ने अपने तीन अंधे भाइयों- खिज्र खां, शादी खां एवं शिहाबुद्दीन उमर को मरवा दिया। उन राजकुमारों को विजय मन्दिर में दफन किया गया जो ग्वालियर दुर्ग का एक बुर्ज है।

कुतुबुद्दीन मुबारक शाह खिलजी :

- मुबारक शाह खिलजी द्वारा **स्वयं को खलीफा घोषित** किया गया। उसने **खलीफा तुल्लाह** की उपाधि धारण की। यह उपाधि सिक्कों पर भी अंकित करवाई। ऐसा करने वाला सल्तनत का प्रथम शासक था और अल इमाम, उल इमाम (उल वासिक विल्लाह), **खिलाफत-उल-लह** आदि उपाधि ग्रहण की। मुबारक शाह खिलजी ने अब्बासी खलीफा की प्रभूता को अस्वीकार कर **स्वयं को खलीफा घोषित किया।**
- इसने अपने शासनकाल में **गुजरात विद्रोह** का दमन किया, **देवगिरि को 1318 ई.** में पुनर्विजित किया। इसने अपने **सैनिकों को 6 माह** का अग्रिम वेतन देते हुए विद्वानों एवं महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों की **जागीरें वापिस** करते हुए अलाउद्दीन की **कठोर दण्ड व्यवस्था** और **बाजार नियंत्रण प्रणाली** को समाप्त किया।
- यह नग्न स्त्री एवं पुरुषों के मध्य रहना पसंद करता था और जियाउद्दीन बरनी के अनुसार कभी-कभी यह दरबार में नग्न घुमा करता था और कभी-कभी स्त्रियों के वस्त्र पहनकर दरबार में आ-जाया करता था।
- इसकी हरकतों से दुखी होकर **खुसरो शाह** ने इसकी हत्या कर दी। मुबारकशाह **सूफी संत निजामुद्दीन औलिया** से **द्वेष** रखता था।

फिकहः- इस्लामी धर्मशास्त्र।

सल्तनत काल में दण्ड के प्रकार

इस्लामी कानून के अनुसार दण्ड तीन प्रकार के होते थे-

- **हदः**- हद वह दण्ड है जिसकी सीमाएँ कुरान और हदीस में दी गई है, यह दण्ड परिवर्तित नहीं किया जा सकता था। इसके न्याय क्षेत्र में यौन दुराचार, धर्म त्याग, मद्यपान, चोरी तथा डाका आता है।
- **किसासः**- इसका अर्थ है प्रतिकार। यह दण्ड कानून द्वारा निर्धारित किया जाता है लेकिन जिस व्यक्ति के प्रति अपराध किया गया है उसका उत्तराधिकारी अपराधों को माफ कर सकता है।
- **ताजीरः**- वह अपराधी जो हद या किसास के अन्तर्गत नहीं आते उनको इस प्रकार के दण्ड के अन्तर्गत दण्डित किया जाता है। इसका लक्ष्य अपराधी को सुधारना है।

सल्तनतकालीन प्रमुख अधिकारी

अधिकारी का नाम	:	कार्य
आरिज-ए-मुमालिक	:	सैन्य विभाग (दीवान-ए-अर्ज) का प्रधान था। सैनिकों की भर्ती करना प्रमुख कार्य था।
इंशा-ए-मुमालिक	:	पत्राचार विभाग का प्रधान था।
रसालत-ए-मुमालिक	:	विदेश विभाग का प्रधान था।
वकील-ए-दर	:	शाही महल एवं सुल्तान की व्यक्तिगत सेवाओं का प्रबन्ध करता था।
अमीर-ए-हाजिब (बारबक)	:	दरबारी शिष्टाचार के नियमों को लागू करता था।
सर-ए-जांदार	:	सुल्तान के अंगरक्षकों का प्रधान था।
अमीर-ए-बहर	:	आन्तरिक नौकायन तथा जल मार्गों का नियंत्रण करता था।
अमीर-ए-मजलिस	:	सभाओं एवं दावतों जैसे विशेष उत्सवों का प्रबन्ध करता था।
मुस्तौफी-ए-मुमालिक	:	(महालेखा परीक्षक) राज्य के खर्चों की जाँच करता था। (ऑडिटर जनरल)
मुशरिफ-ए-मुमालिक	:	महालेखाकार (एकाउण्टेंट जनरल) राज्य की आय से संबंधित
दीवान-ए-रियासत	:	बाजार पर नियंत्रण रखना
अमीर-ए-आखूर	:	अश्वशाला का प्रधान (आखुर बक)
शहना-ए-मंडी	:	बाजार मूल्य नियंत्रण बाट-माप की जाँच करना।
मजमुआदार	:	आय-व्यय को ठीक करना (राजस्व)
अमीर-ए-दाद	:	सुल्तान की अनुपस्थिति में मजलिस की अध्यक्षता करता था। (दादबक)
मुहतसिब	:	लोगों के आचरण पर नजर रखता था
मतशरिफ	:	शाही कारखाने की देखभाल करता था
बरीद-ए-मुमालिक	:	सूचनादाता एवं गुप्तचर विभाग का प्रमुख था
शहना-ए-पील	:	हस्तिशाला का अध्यक्ष
सद्र-उस-सुदूर	:	धर्म सम्बन्धी कार्यों का प्रमुख था
खाजिन	:	राजकीय आय को संग्रहित करता था
दबीर-ए-खास	:	शाही पत्र व्यवहार से सम्बद्ध
काजी-उल-कुजात	:	न्याय विभाग का प्रमुख था
मुफ्ती	:	धर्म की व्याख्या करता था
अमीर-ए-दाद	:	बड़े नगरों का मजिस्ट्रेट था
खासखेल	:	शाही महल की सुरक्षा के लिए नियुक्त सैनिक
कोतवाल	:	शहरों में शान्ति व्यवस्था के लिए उत्तरदायी था।

उद्योग एवं व्यापार :

- सातवीं शताब्दी से दसवीं शताब्दी तक का युग भारत तथा अरब जगत के मध्य व्यापारिक सम्बन्धों का स्वर्णकाल कहा गया है। सल्तनत काल में बाह्य व्यापार में उन्नति हुई।
- सर्वप्रथम अरब मुस्लिम व्यापारी के रूप में केरल पहुँचे। इसके साथ ही भारत तथा अरब जगत् के मध्य व्यापारिक संबंधों की शुरुआत हुई। मुहम्मद बिन तुगलक का काल व्यापारिक गतिविधियों के लिए सर्वश्रेष्ठ रहा। लोदी शासक स्वयं में ही व्यापारी थे। इस काल में व्यापारियों के समूह को **तुज्जार-ए-खास** कहा जाता था। बरनी द्वारा दो प्रकार के व्यापारियों का उल्लेख किया गया है- मुल्तानी व कारवानी।
- मिनहाजुद्दीन सिराज के **तबकाते नासिरी** के अनुसार देश के विभिन्न भागों में व्यापारिक वस्तु पर कर प्राप्त करने के लिए चौकियाँ स्थापित की गई थी। मध्यकाल में मुल्तान सबसे प्रसिद्ध व्यापारिक नगर था। देवल (गुजरात) बंदरगाह का कार्य करता था। देवगिरि के निवासी अधिकतर व्यापारी थे। बंगाल चावल व रेशम के लिए प्रसिद्ध था। चार पहिए वाले रथ तथा इक्के का वर्णन भी सल्तनतकाल में मिलता है। नौका निर्माण का उद्योग इस काल में काफी जोरों पर था।
- विदेशों से आयात की जाने वाली वस्तुओं में सर्वाधिक अरबी

6 भक्ति एवं सूफी आन्दोलन

सूफी आन्दोलन :

- इस्लाम में रहस्यवादी 'सूफी' नाम से जाने जाते हैं। सूफीवाद के लिए-इस्लामी ग्रंथों में जिस शब्द का प्रयोग होता है वह है-**तसत्वुफ़।** सूफी शब्द अरबी के 'सूफ' शब्द से निकला है जिसका अर्थ है – 'ऊन/ज्ञान'। सूफीवाद का मूल स्त्रोत इस्लाम ही है। यह प्रेम (इश्क) पर आधारित है जिसमें इस्लामिक कर्मकाण्ड की जगह आध्यात्मिक पहलुओं पर बल दिया गया है। सूफी अरबी शब्द **सफा** (पवित्रता) से उद्गमित हुआ है जो पैगम्बर की मस्जिद के बाहर एक चबूतरा था जहाँ अनुयायियों की मंडली धर्म के विषय में जानने हेतु इकट्ठी होती थी। जो व्यक्ति आचार-विचार से पवित्र थे सूफी कहलाये। सर्वप्रथम **कूका** के **अबू हशीम** को सूफी कहकर पुकारा था।
- पाश्चात्य विद्वान **ब्राउन** ने इस मत को स्वीकार करते हुए लिखा है कि ईरान में इन रहस्यवादी साधकों को ऊन पहनने वाला कहा जाता था। ईरान के ये सन्त ऊनी वस्त्र को जीवन की सादगी तथा विलासिता से दूर रहने का प्रतीक मानकर एकांत जीवन पर जोर देते थे।
- सूफियों का विश्वास है कि पैगम्बर साहब पहले सूफी थे। इन्होंने पैगम्बर मोहम्मद को इंसान-ए-कामिल बताते हुए उनका अनुसरण करने की सीख दी। **बसरा** प्रथम स्थल बना जहाँ भिन्न-भिन्न स्थानों के सूफी आकर अपने रहस्यों की चर्चा करते थे। मिस्त्र के **जुन्नू मिस्त्री** ने चिंतन-मनन की प्रक्रिया के जरिये ईश्वर के साथ रहस्यवादी मिलन की संकल्पना दी।

सूफी मत का आविर्भाव :

- इस्लाम धर्म के रूप में इसका विकास ईसा की नौवीं शताब्दी में हुआ। इसका तत्त्व न केवल इस्लाम से लिया गया है बल्कि इसमें अन्य धर्मों तथा दर्शनों का भी समावेश है। रोजा, पाँच बार नमाज, हज आदि धार्मिक कृत्यों और आचार का इस्लाम धर्म में काफी महत्त्व हैं।
- **सूफी मत का विकास काल नौंवी सदी से जाना जाता है।** सूफी साधकों का चिल्ला-ए-माकुस (शरीर को यातना देना), खानकाह के प्रधान के समक्ष नतमस्तक होना, नवागंतुकों को जल देना, सिर मुड़ाना, समा (संकीर्तन का आयोजन) आदि बातें पूर्णरूप से हिन्दू प्रभावों को स्पष्ट करती हैं।

प्रथम चरण :

- इस अवस्था में फकीरी जीवन बिताने की प्रवृत्ति मुख्य रूप से क्रियाशील थी। आठवीं सदी में खुरासान राजनीतिक तथा धार्मिक आन्दोलन का केन्द्र बन गया था।
- इस काल में सूफी मत का आधार व्यक्तिगत था। सूफी साधक एकान्त जीवन में प्रायश्चित करते थे। उनमें प्रेम साधना की भावना का बिल्कुल अभाव था।
- इस अवस्था में प्रमुख साधकों में इमाम हसन बसरी (728 ई.), इब्राहीम बिन आधम (777 ई.), अबू हाशिम (777 ई.) तथा रबिया बसरी (770 ई.) के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

द्वितीय चरण :

- इस अवस्था में रहस्यवादी प्रवृत्तियों का विकास हुआ तथा सैद्धांतिक और दार्शनिक चिन्तन की प्रधानता रही।
- सूफी साधकों ने परम सत्ता को प्रियतम के रूप में देखना प्रारम्भ किया। उनके सम्पूर्ण धार्मिक कृत्यों का उद्देश्य प्रियतम को प्राप्त करना हो गया।

तृतीय चरण :

- सूफीवाद के विकास में **सूफी सिलसिलों का उदय बारहवीं तथा तेरहवीं सदी की देन** है।
- मुस्लिम समाज में अराजकता, अव्यवस्था, नैतिक पतन का सामना करने तथा उसमें नव-जीवन प्रदान करने के लिए सूफी संतों ने 'खानकाह' की स्थापना की। प्रमुख रूप से प्रारम्भिक काल में दो सम्प्रदाय थे- (1) इलहामिया तथा (2) इत्तिहादिया। खानकाह की स्थापना भी कुरान के आधार पर हुई। इसके कुछ नियम थे जिनका पालन करना सभी के लिए अनिवार्य था। खानकाह के लोग दो वर्गों में विभक्त थे – मुकीम (स्थायी रूप से निवासी) और मुसफिरीन (भ्रमणकारी)।
- सूफी साधक पूर्ण मानव को अपना गुरु मानता है बिना आध्यात्मिक गुरु के वह कुछ भी नहीं प्राप्त कर सकता है। मुरीद अपने मुर्शीद को ईश्वर की भाँति सदैव स्मरण करता है। सूफी सर्वेश्वरवादी थे। सूफी विचारधारा में तर्क-ए-दुनिया का अर्थ उद्बुद्ध विश्व है। सूफी सन्त कुरान के मूल आधार में विश्वास करते थे। उनका जीवन बहुत सादा होता था। ईश्वर की प्राप्ति के लिए उन्होंने दस बातों का पालन करना आवश्यक बताया है। ये **दस बातें** हैं:- तोबा (बुरे कर्मों के प्रति क्षोभ), बारा (अपरिग्रह), जुहूद (करुणा), फकर (निर्धनता), सब्र (बर्दाश्त), शुकर (अहसानमन्द), खौफ (भय), राज (आशा), ताबालुख (सन्तोष) और रिजा (ईश्वर को आत्मसमर्पण)।

सूफी दर्शन सिद्धान्त

- सूफियों (रहस्यवादी) का उदय इस्लाम में बिल्कुल प्रारंभिक अवस्था में हुआ था। भारत में इस पर जैन एवं हिन्दू दर्शन का प्रभाव पड़ा। इस्लामी इतिहास में 10वीं शताब्दी में दो विचारधाराओं का उदय हुआ- 1. कुरान एवं हदीस पर आधारित तथा 2. सूफी रहस्यवाद। अनल-हक (मैं ईश्वर हूँ) की सूफी अवधारणा वेदान्त/उपनिषद की अहम् ब्रह्मास्मि अवधारणा से प्रेरित है।

आधुनिक भारत

1 मराठा साम्राज्य

मराठा वंश

मराठा वंश का उद्भव शिवाजी के नेतृत्व में 17वीं सदी में हुआ। इतिहासकारों के अनुसार मराठों के उत्कर्ष में सबसे महत्त्वपूर्ण कारण महाराष्ट्र की भौगोलिक स्थिति थी क्योंकि यह प्रदेश अधिकांश पहाड़ों, नदियों, जंगलों एवं अनुपजाऊ भूमि वाला क्षेत्र था।

16-17वीं शताब्दी में हुए धार्मिक आंदोलनों ने महाराष्ट्र में तुकाराम, रामदास, एकनाथ और वामन पंडित जैसे धर्मसुधारकों ने जन्म लिया जिन्होंने मराठों को एकता के सूत्रों में बांधने के लिए और देशभक्ति की भावना को जाग्रत करने के लिए महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। इन धर्मोपदेशों के द्वारा मराठी भाषा को उपदेशों का माध्यम बनाने के कारण मराठा साहित्य का उद्भव एवं विकास हुआ। जिसने मराठों के उत्कर्ष में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। मराठों द्वारा **मोडी** लिपि का प्रयोग अभिलेख लेखन में किया गया। **ग्रान्ट डफ** के अनुसार सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में मराठों का उदय **आकस्मिक अग्निकाण्ड** की भाँति हुआ। मराठों के मूल प्रदेश पश्चिमी महाराष्ट्र और कोंकण प्राय: मुस्लिम राजनीतिक प्रभाव से मुक्त रहे। इस क्षेत्र पर **बीजापुर** तथा **गोलकुण्डा** के बहमनी सुल्तानों का अधिकार नाममात्र का ही था। शिवाजी के उदय से पूर्व भी मराठों को प्रशासनिक और सैनिक क्षेत्रों में विशेष स्थान प्राप्त था। बहुत से मराठा **सिपहसालार** तथा **मनसबदार** के रूप में बहमनी राज्य और उसके उत्तराधिकारी **बीजापुर** और **अहमदनगर** राज्य में नौकरी करते थे।

शिवाजी के पूर्वज मेवाड़ के सिसोदिया वंश से थे। 1303 ई में हम्मीर सिसोदिया के पिता **अरिसिंह** के छोटे भाई व हम्मीर के चाचा **अजयसिंह** का पुत्र **सज्जन सिंह** हुआ जो द. भारत (महाराष्ट्र) चले गये। इसी सज्जन सिंह की 21वीं पीढ़ी में **शाहूजी** महाराज हुए और **शाहू जी** महाराज के पुत्र शिवाजी महाराज हुए। **शिवाजी** के पिता **शाहजी** थे जो मालोजी के पुत्र थे। सिंघखेड़ के जागीरदार मालोजी लखूजी जाधव के अंगरक्षक थे। बाद में ये अहमदनगर सुल्तान के संरक्षण में चले गये। अहमदनगर के वजीर मलिक अम्बर ने इन्हें सेना में रख लिया और पूना-सूपा की जागीर दे दी। 1605 में शाहजी का विवाह **लखूजी जाधव** की पुत्री जीजाबाई से हो गया। 1620 ई में शाहजी जहाँगीर की सेवा में चले गये और उमरा वर्ग में शामिल हो गये। 1632 में शाहजी पुन: अहमदनगर आ गए।

औरंगजेब की हिन्दू विरोधी नीति के कारण ही शिवाजी ने हिन्दूपद पादशाही एवं हिन्दूत्व धर्मोद्धारक की उपाधि ग्रहण की तथा ब्राह्मणों व गौरक्षा का प्रण लिया जो मराठों के उत्कर्ष का एक महत्वपूर्ण कारण था। **मराठा साम्राज्य के संस्थापक शिवाजी** थे। **जे. एन. सरकार** ने **शिवाजी को मध्यकालीन भारत का सृजनशील व्यक्तित्व बताया है। फारसी इतिहासकार खाफी खाँ ने शिवाजी की धार्मिक नीति की प्रशंसा की है। शिवाजी इस्लाम के विरूद्ध नहीं थे परन्तु उन्होंने व्यापार-वाणिज्य की उपेक्षा की।**

- **जदुनाथ सरकार** ने कहा कि "मैं शिवाजी को हिन्दू प्रजाति का अन्तिम प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति और राष्ट्र निर्माता मानता हूँ।"
- **रॉबिन्सन** ने कहा कि "शिवाजी कैदी बनाए गए सैनिक अफसरों को युद्ध के बाद मुक्त कर दिया करता था।"
- **अबे केरे** ने कहा कि "राजा शिवाजी अपनी उदारता से अपने गुप्तचरों को भुगतान करता है जिस कारण उनके द्वारा प्रदत्त सही सूचना से उसको विजयों में बड़ी मदद मिलती है।"

मराठों के उदय के बारे में विभिन्न इतिहासकारों के मत-

- कम वर्षा एवं कम उत्पादन के कारण मराठों को जीविकोपार्जन के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता था जिसने इन्हें वीर और साहसी बना दिया।
- पड़ौसी भू-भागों में लूटमार करने की उनकी प्रवृत्ति ने उनमें सैनिक गुणों का विकास किया।
- मराठों में आपसी एकता एवं पुर्नजागरण लाने में तत्कालीन भाषा एवं साहित्य का भी योगदान रहा, मराठी सन्तों ने जनसाधारण की भाषा में अपने उपदेश का प्रचार किया।
- **ग्राण्ट डफ** मराठों के उदय को सह्याद्रि पर्वतों में विद्रोही गतिविधियों के रूप में देखते हैं।
- **एम जी रानाडे** इसे विदेशी शासन के खिलाफ राष्ट्रीय संघर्ष के रूप में देखते हैं।
- **एम जी रानाडे** के अनुसार मराठों का उत्थान मुगलों से मुक्ति के लिए राष्ट्रीय आन्दोलन था।
- **जदुनाथ सरकार और जी.एस. सरदेसाई** मराठा शक्ति के उत्कर्ष को औरंगजेब की असहिष्णुतावादी नीतियों के विरूद्ध एक हिन्दू प्रतिक्रिया के रूप में मानते हैं।
- **सतीशचन्द्र** ने जदुनाथ सरकार और सरदेसाई के तर्क का खंडन करते हुए कहा हैं कि शिवाजी ने अकबर के 'सुलहकुल' नीति का समर्थन किया था।
- **इरफान हबीब** मराठा शक्ति के उदय को शोषित किसानों की विद्रोही चेतना को जोड़ते हैं।
- **हरबर्ट रिजले** द्वारा मराठों की उत्पत्ति का सीथियन-द्रविड सिद्धान्त दिया।

शिवाजी (1627–80 ई.) :

जन्म- 20 अप्रैल, 1627
स्थान- पूना के समीप शिवनेर दुर्ग में
पिता- शाहजी भोंसले

2 यूरोपीय कम्पनियों का आगमन

भारत में यूरोपियन लोगों का आगमन मध्यकालीन इतिहास में तुर्कों के समय से हो गया। इन्होंने भारत के साथ व्यापार करने के उद्देश्य से गुप्तमार्गों व समुद्री रास्तों की खोज की। यूरोपियन व्यापारियों में सबसे पहले पुर्तगाली भारत आये और सबसे अंत में भारत को आजाद करके जाने वाले भी पुर्तगाली थे। प्रारम्भिक यूरोपीय **मसालों** भारतीय वस्तु का व्यापार करते थे। भारत में यूरोपीय व्यापारिक कम्पनियों के आगमन का क्रम इस प्रकार था। **पुर्तगीज-डच-अंग्रेज-डेन-फ्रांसीसी।** ध्यान रहे कि अंग्रेज डच के बाद भारत आये थे, तथापि अंग्रेजों की ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना डच ईस्ट इण्डिया कम्पनी से पहले ही हो चुकी थी।

- 1453 में उस्मानिया सल्तनत (तुर्क) ने कुस्तुनतुनिया जीत लिया और धीरे-धीरे सम्पूर्ण दक्षिण-पश्चिम एशिया और दक्षिण-पूर्वी यूरोप पर अधिकार कर लिया। इससे यूरोप के एशिया व पूर्वी देशों से व्यापार करने के स्थल-मार्ग पर उनका एकाधिपत्य हो गया और ये मार्ग यूरोपीय जातियों के लिए बिल्कुल बन्द हो गये। इस कारण यूरोपीय देशों को भारत और पूर्वी एशिया के देशों से व्यापार करने के लिए जल-मार्ग की खोज करने की आवश्यकता हुई।
- पुर्तगाली राजकुमार **हेनरी द नेविगेटर** ने लम्बी समुद्री यात्राओं का संभव बनाने के लिए दिक् सूचक यंत्र तथा नक्षत्र यंत्र के द्वारा गणनायें करने वाली तालिकाएँ और सारणियों का निर्माण कराया जिससे समुद्र की लम्बी यात्रायें संभव हुई। इसी प्रयास में कोलम्बस स्पेन से भारत के लिए समुद्री-मार्ग खोजने चला था किन्तु 1492 में अमेरिका पहुँच गया। इस प्रकार, अमेरिका की खोज हुई। हेनरी द नेवीगेटर व जॉन द्वितीय ने भारत पहुंचने के नए मार्गों की खोज के लिए अनेक बार अपने सर्वश्रेष्ठ नाविकों को रवाना किया था लेकिन अफ्रीका के दक्षिण में पहुंचते ही वे समुद्र के शिकार बन जाते। इस कारण इस स्थान का नाम 'केप ऑफ स्टॉर्म' (तुफान अंतरीप) रख दिया गया।
- **जॉन द्वितीय के सरंक्षण में बायोलोमियो डियाज** 1486 में पहली बार अफ्रीका के दक्षिण तट तक पहुंचने में सफल रहा जिसके बाद इस स्थान का नाम 'केप ऑफ स्टॉर्म' से बदलकर 'केप ऑफ गुड होप' (आशा अंतरीप) कर दिया गया। दूसरा पुर्तगाली कैप्टन वास्को-डी-गामा पुर्तगाल से चलकर इसी आशा अन्तरीप को जिसे उत्तरमाशा अन्तरीप भी कहते हैं, को पार करता हुआ आगे पूर्व की ओर बढ़ा और अब्दुल मनीक नामक गुजराती पथ-प्रदर्शक की सहायता से 20 मई, 1498 को भारत के पश्चिमी तट स्थित बन्दरगाह कालीकट (केरल, भारत) पहुँच गया। इस प्रकार भारत के लिए एक नया यूरोपीय समुद्री-मार्ग खोजा गया। वास्कोडिगामा मोजांबिक पहुंचने के बाद एक गुजराती पथ-प्रदर्शक अब्दुल माजिद का पीछा करता हुआ साओ गैब्रिएल (वास्कोडिगामा इसी पोत पर सवार था जिसका मुख्य चालक पेरो द अलेंकर था), साओं सफाएल व बेरियो नामक पोतों के साथ्ज्ञ कालीकट पहुंच पाया था। माजीद ने उसे पूर्वी अफ्रीका के मालिन्दी से लेकर कालीकट तक रास्ता दिखाया, वरना उसे पुर्तगाल वापिस लौटना पड़ता।

पुर्तगाली

- प्रथम पुर्तगाली तथा प्रथम यूरोपीय यात्री वास्को-डी-गामा 90 दिन की समुद्री यात्रा के बाद 1498 ई. को कालीकट बंदरगाह (केरल, भारत) के समुद्र तट पर उतरा। कालीकट के हिन्दू शासक जमोरिन (वास्तविक नाम-सामुदरी) ने वास्को-डी-गामा का स्वागत किया, लेकिन कालीकट के समुद्र तटों पर पहले से ही व्यापार कर रहे अरबों ने इसका विरोध किया। कालीकट के प्रसिद्ध बन्दरगाह पर ''कप्पकडाबू'' नामक स्थान पर वास्को-डी-गामा ने अपना बेड़ा उतारा।
- वास्को-डी-गामा पुर्तगाल के शासक डॉन हेनरीक (प्रिंस हेनरी 'द नेवीगेटर') के प्रतिनिधि के रूप में भारत आया था। वह भारत से लौटते समय जो मसाला अपने साथ लेकर गया था। वास्को-डी-गामा ने भारत में कालीमिर्च के व्यापार से 60 गुना अधिक मुनाफा कमाया, जिससे अन्य पुर्तगीज व्यापारियों को भी प्रोत्साहन मिला। इस तरह पुर्तगाल की राजधानी लिस्बन कुछ समय के लिए समस्त यूरोपीय व्यापार का केन्द्र बन गई और पुर्तगाली शासक एम्मानुल प्रथम द्वारा वाणिज्य के प्रधान की उपाधि धारण की गई।
- पुर्तगालियों के दो प्रमुख उद्देश्य थे-अरबों और वेनिश के व्यापारियों का भारत से प्रभाव समाप्त करना तथा ईसाई धर्म का प्रचार करना। पुर्तगाली सामुद्रिक साम्राज्य को **एस्तादो द इण्डिया** नाम दिया गया। वास्कोडिगामा के बाद भारत आने वाला दूसरा पुर्तगाली यात्री **पेड्रो अल्ब्रेज कैब्राल** (1500 ई.) था। 1500 ई में द्वितीय पुर्तगाली अभियान के तहत् पेड्रो अल्वारेज कैब्राल 13 जहाजों के एक बेड़े का नायक बनकर

- टीपू सुल्तान ने अपने समकालीन विदेशी राज्यों से मैत्री संबंध बनाने तथा अंग्रेजों के विरुद्ध उनकी सहायता प्राप्त करने के उद्देश्य से अरब, कुस्तुनतुनिया अथवा वार्साय काबुल और मॉरीशस को दूतमण्डल भेजा। इन में सर्वाधिक प्रमुख नेपोलियन बोनापार्ट था।
- **पूरनिया व कृष्णराव** नामक दो हिन्दू इसके प्रमुख मंत्री थे। टीपू भारत का प्रथम शासक था जिसने पाश्चात्य प्रशासनिक व्यवस्था को अपनाया और फ्रांसीसी जल सेना के लेफ्टिडेंट लिवो को अपनी सेना का अधिकारी नियुक्त किया।
- अंग्रेजी नौसेना के मुकाबले के उद्देश्य से टीपू ने 1796 ई. में एक **नौसेना बोर्ड** का गठन किया। मंगलौर, मोलीदाबाद, दाजिदाबाद आदि में टीपू ने पोत निर्माण घाट का निर्माण कराया।
- टीपू आधुनिक उद्योगों की स्थापना में रुचि लेता था, उसने देशी तथा अन्तर्देशी व्यापार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से अपने गुमाश्तों की नियुक्ति व्यापारिक केन्द्र मस्कट, ओर्मुज जद्दाह तथा अदन में किया। टीपू सुल्तान द्वारा विदेशों में आधुनिक पद्धति से दूतावास स्थापित किए। टीपू सुल्तान ने कैलेण्डर, सिक्का ढलाई एवं तौल तथा माप की नई पद्धति प्रचलित की, गैरकानूनी उपकरों को हटाया, आधुनिक शस्त्रागार का निर्माण किया, रेशम उत्पादन तथा व्यापार को बढावा दिया।
- टीपू ने जमींदारी व्यवस्था को समाप्त कर सीधे रैय्यत से सम्पर्क स्थापित किया, साथ ही करमुक्त भूमि इनाम पर अधिकार कर पॉलिगर के पैतृक अधिकार को जब्त कर लिया।
- साम्राज्यवादी लेखकों ने टीपू को 'सीधा सादा दैत्य' कहा।

तृतीय आंग्ल मैसूर युद्ध (1790–92 ई.) :

- टीपू के समय लड़े गये **तृतीय आंग्ल मैसूर युद्ध** का कारण अंग्रेजों ने टीपू के ऊपर इस आरोप को लगाकर तैयार किया कि उसने फ्रांसीसियों से अंग्रेजों के विरुद्ध गुप्त समझौता किया है तथा त्रावणकोर पर उसने (टीपू) आक्रमण किया।
- अंग्रेजों ने मराठों और निजाम के सहयोग से श्रीरंगपट्टनम् पर आक्रमण किया। मिडोज के नेतृत्व में टीपू पराजित हुआ।
- फरवरी 1792 में तत्कालीन गवर्नर-जनरल कार्नवालिस ने टीपू के श्रीरंगपट्टनम स्थित किले को घेरकर उसे संधि के लिए मजबूर किया।
- अंग्रेजों और टीपू के बीच मार्च 1792 में **श्रीरंगपट्टनम की संधि** सम्पन्न हुई। संधि की शर्तों के अनुसार टीपू को अपने राज्य का आधा हिस्सा अंग्रेजों और उसके सहयोगियों को देना था साथ ही युद्ध के हर्जाने के रूप में टीपू को 3 करोड़ 30 लाख रुपये अंग्रेजों को देना पड़ा।
- श्रीरंगपट्टनम की संधि में यह भी शामिल था कि जब तक टीपू 3 करोड़ नहीं देंगे तब तक उसके दो पुत्र अंग्रेजों के कब्जे में रहेंगे।
- तृतीय आंग्ल-मैसूर युद्ध के परिणामस्वरूप मैसूर आर्थिक तथा सामाजिक रूप से इतना कमजोर हो गया कि टीपू के लिए इसे अधिक दिनों तक स्वतंत्र रखना मुश्किल हो गया। टीपू के राज्य का अंग्रेजों, मराठों तथा निजाम के बीच विभाजन हो गया। मालाबार क्षेत्र अंग्रेजों के प्रशासन के अन्तर्गत आ गया।
- तृतीय आंग्ल-मैसूर युद्ध के बाद लार्ड कार्नवालिस ने कहा कि "बिना अपने मित्रों को शक्तिशाली बनाये हमने अपने शत्रु को कुचल दिया।"

चतुर्थ आंग्ल-मैसूर युद्ध (1799 ई.) :

- इस समय बंगाल का गवर्नर जनरल लार्ड वेलेजली द्वारा श्रीरंगपट्टनम पर आक्रमण का आदेश दिया गया
- इस युद्ध के समय टीपू ने अंग्रेजों से मुकाबले के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग लेने की दिशा में प्रयास किया, इसने नेपोलियन से भी पत्र व्यवहार किया।
- चतुर्थ युद्ध के समय अंग्रेजों ने निजाम और मराठों से युद्ध में प्राप्त लाभ को तीन बराबर भागों में बाटने की शर्त पर समझौता किया।
- चतुर्थ आंग्ल-मैसूर युद्ध के समय अंग्रेजी सेना को **जनरल हैरिस** और **स्टुअर्ट** ने अपना नेतृत्व प्रदान किया।
- 4 मई, 1799 ई. को टीपू ने संयुक्त अंग्रेजी सेना से बहादुरी के साथ लड़ता हुआ मारा गया। टीपू की मृत्यु श्रीरंगपट्टनम् में हुई। इस तरह मैसूर की स्वतंत्रता का इतिहास उसके द्वारा अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष के गौरवशाली अध्याय का समापन हो गया। चतुर्थ आंग्ल-मैसूर युद्ध के बाद लार्ड वैलेजली ने कहा कि 'पूर्व का साम्राज्य हमारे पैरो के नीचे हैं' तथा घोषणा की कि 'अब भारत हमारा है'।
- मार्क्स विल्क्स ने कहा ''हैदर एक सुधारशील राजा था और उसने कुछ नव प्रवर्तन प्रदर्शित किए। टीपू एक नव प्रवर्तन शील राजा था और उसने कोई सुधार नहीं किए।
- टीपू ने कहा था कि ''भेड़ की तरह 100 दिन जीने से अच्छा है कि शेर की तरह एक दिन जिया जाए।
- अंग्रेजों ने मैसूर की गद्दी पर फिर से आड्यार वंश के एक बालक कृष्ण राय को बैठा दिया तथा कनारा, कोयम्बटूर और श्रीरंगपट्टनम को अपने राज्य में मिला लिया।
- मैसूर को जीतने की खुशी में आयरलैण्ड के लार्ड समाज में वेलेजली को **मार्क्विस** की उपाधि प्रदान की।

प्रथम मैसूर युद्ध- कर्नल स्मिथ

द्वितीय मैसूर युद्ध के समय गवर्नर जनरल-वारेन हेस्टिंग्स

तृतीय मैसूर युद्ध के समय गवर्नर जनरल-लॉर्ड कार्नवालिस

चतुर्थ मैसूर युद्ध के समय गवर्नर जनरल-लॉर्ड वेलेजली

- यद्यपि भारत में आर्थिक शोषण के नये रूपों ने अंग्रेजों को कुछ विकासात्मक कार्य भी करने के लिए मजबूर किया, जैसे-तैयार माल को देश की भीतरी भागों तक पहुँचाने और वहां से खाद्यान्नों को बंदरगाहों तक लाने या कच्चे माल को बंदरगाहों तक लाने की आवश्यकता ने यातायात के साधनों के विकास और मार्गों की सुरक्षा के लिए ब्रिटिश शासकों को मजबूर होना पड़ा। इस परिप्रेक्ष्य में सर्वाधिक क्रान्तिकारी कार्य रेलवे का विकास माना गया।
- अमरीकी अर्थशास्त्री **मॉरिस डी. मॉरिस** के अनुसार, ''औद्योगिक क्रांति के बाद का यह बदलाव अपरिहार्य था, जहाँ औद्योगिक क्रांति के बाद इंग्लैण्ड के पतनशील हस्तशिल्प उद्योग बडे कारखाने और उद्योगों में अपने को खपत कर स्वयं की क्षतिपूर्ति कर ली वहीं भारत में ऐसा कुछ नहीं हुआ, 1856-60 के दशक में भारत में कारखानों का अस्तित्व ही नहीं था।''
- 1757-85 के बीच इंग्लैण्ड में हरग्रीब्ज ने कताई की मशीन, जेम्सवाट ने भाप का इंजन, आर्कराइट ने वाटरफ्रेम, क्रॉम्पटन ने म्यूल तथा कार्टराइट ने पावरलूम का आविष्कार किया।
- 18 वीं सदी के बाद यह सभी आविष्कार अपेक्षित शक्ति के अभाव में तब तक अपेक्षित थे, जब तक कि भारत की लूट से संचित पूंजी व्यापक पैमाने पर इंग्लैण्ड नहीं पहुंच जाती।
- उद्योगों में भारतीय वस्त्र उद्योग सर्वाधिक विकसित था। ढाका का मलमल, लाहौर के गलीचे, कश्मीर की शाल, बनारस का जरी का काम, अहमदाबाद की धोतियां व दुपट्टे, लखनऊ का चिकन, बार्डर के लिए नागपुर का सिल्क उद्योग प्रसिद्ध था। डैफो नामक लेखक ने अपने उपन्यास 'राबिन्सन क्रूसो' में शिकायत की थी कि ''भारतीय कपड़ा हमारे घरों, आलमारियों और शयन के कक्षों तक में घुस गया हैं।''
- वस्त्र उद्योग के अतिरिक्त जहाज निर्माण उद्योग, चमड़ा उद्योग और संगमरमर पत्थर, हाथी दाँत, लकड़ी व चंदन की तराशी व नक्काशी भी विश्व प्रसिद्ध था। मुरादाबाद पीतल, कांसे व तांबे में, तो हथियारों के लिए कच्छ, सिंध व पंजाब प्रसिद्ध था, शीशे का उद्योग कोल्हापुर, सतारा, गोरखपुर, आगरा और बालघाट में होते थे।
- परम्परागत भारतीय हस्तशिल्प उद्योग के पतन पर गवर्नर जनरल **बैंटिक** की सरकार ने कहा कि ''इस दुर्दशा का व्यापार के इतिहास में जोड़ नहीं, भारतीय बुनकरों की हड्डियां भारत के मैदान में बिखरी पड़ी हैं।''
- भारत में हस्तकला और उद्योगों के पतन ने भारी निर्धनता और बेरोजगारी को जन्म दिया, इसलिए 19 वीं सदी के अंत तक भारत में आधुनिक आधार पर औद्योगीकरण की आवश्यकता राष्ट्रीय आवश्यकता बन गई।
- **कार्ल मार्क्स** के अनुसार, ''यह अंग्रेज घुसपैठिया था जिसने भारतीय खड्डी और चरखे को तोड़ दिया। पहले इंग्लैण्ड ने भारतीय सूती माल को यूरोपीय मंडियों से बाहर किया और फिर भारत में जो सूतीमाल की मांग थी, में सूती माल की बाढ़ ला दी।
- इस प्रकार कम्पनी तथा ब्रिटिश पूंजीपतियों ने मिलकर भारतीय हस्तशिल्प उद्योग को पूर्णत: नष्ट कर दिया। 'करघा' ओर 'चरखा' जो पुराने भारतीय समाज की धुरी के रूप में प्रसिद्ध थे, को तोड़ डाला तथा भारतीय बाजारों को लंकाशायर और मैनचेस्टर में निर्मित कपड़ों से भर दिया।

3. वित्तीय पूँजीवाद (1860 के बाद)

- भारत में ब्रिटिश उपनिवेशवाद के तीन चरण को वित्तीय पूँजीवाद (1860 के बाद) के नाम से जाना जाता है।
- 1857 का विद्रोह औपनिवेशिक नीतियों के विरूद्ध भारतीय लोगों, विशेष रूप से किसानों के रोष की सशक्त अभिव्यक्ति थी, विद्रोह के बाद ब्रिटेन और भारत के रूढ़िवादी प्रतिक्रियावादी तत्वों में मेल-मिलाप हो गया।
- इन तत्वों की वाणिज्यिक और सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सड़कों और रेलों, डाक और तार, बैंक तथा अन्य सेवाओं का विकास प्रारम्भ हुआ, जिसमें अंग्रेजों को पूंजी निवेश के अवसर मिले।
- अंग्रेज पूंजीपति भारत में पूंजी निवेश के लिए इसलिए आतुर था क्योंकि वह अपनी अतिरिक्त पूंजी को सुरक्षित तरीके से यहां नियोजित कर सकता था, उपनिवेश में मजदूरी सस्ती होने के कारण अच्छा मुनाफा कमा सकता था साथ ही गृह उद्योग के लिए सस्ता कच्चा माल भी निरंतर प्राप्त कर सकता था, इन्हीं उद्देश्यों से प्रेरित होकर भारत में 1860 के बाद ब्रिटिश उपनिवेश का तीसरा चरण वित्तीय पूंजीवाद प्रारम्भ हुआ।
- भारत के विशाल बाजार पर कब्जा करने के महत्व से उद्योगपतियों का परिचित होना और भारत में सस्ते श्रम की उपलब्धता का लोभ आदि ने भारत में ब्रिटिश वित्तीय पूँजी के प्रवेश मार्ग को सुगम बनाया। यह निवेश मुख्यत: रेल, बगान उद्योग (जैसे-चाय, कॉफी, रबड़ के बागानों), सड़क, सिंचाई, कोयला खानों, बैंकिंग तथा सरकार को कर्ज देने में किया।
- ध्यातव्य है कि 1858 ई के बाद भारत सरकार के ऋण में तीव्र वृद्धि हुई। यह ऋण ज्यादातर ब्रिटिश पूंजीपतियों के द्वारा ही दिया गया। 1858 ई में जब कंपनी शासन का अंत हुआ तो भारत पर 7 करोड़ पौंड का कर्ज था। यह कर्ज 1939 ई में 88 करोड़ 42 लाख हो गया।
- 19 वीं शताब्दी के मुक्त व्यापार से उत्पन्न अन्तर्विरोधों और 1857 के विद्रोह के परिणामों ने अंग्रेजों को इस बात के लिए विवश किया कि वे भारत में अपने व्यापारिक, सामाजिक हितों की पूर्ति के लिए रेल लाइनों के निर्माण, सड़कों के विकास और सिंचाई के साधनों की ओर ध्यान दिया जाये।
- 1860 के बाद अंग्रेजों द्वारा भारत में बड़े पैमाने पर पूंजी निवेश की शुरूआत हुई। पूंजी निवेश वाले प्रमुख क्षेत्र थे सरकार को ऋण, रेल-निर्माण, सिंचाई परियोजनाएं, चाय, कॉफी और रबड़ के बाग, कोयला, खानें, जूट मिलें, जहाजरानी, बैंकिंग आदि। 1839 में असम में सर्वप्रथम प्रथम चाय कम्पनी की स्थापना हुई।

7 आधुनिक भारत में समाज सुधार आन्दोलन

19 वीं सदी के सामाजिक धार्मिक आन्दोलनों के कारण भारत का आधुनिकीकरण हुआ। सामाजिक, धार्मिक आन्दोलनों के मूल में बुद्धिवाद, वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा अन्य ऐसे विचार थे जो आधुनिकता के आधार माने जाते थे। हालांकि इन आंदोलनों का ज्यादा जोर धार्मिक सुधारों की तरफ ही था, फिर भी इनमें से किसी भी आंदोलन का चरित्र पूरी तरह धार्मिक नहीं था। इनकी अंत: प्रेरणा थी मानववाद। परलोक और मोक्ष जैसी बाते इनका मुद्दा नही थीं, बल्कि इनका सारा जोर इहलौकिक अस्तित्व पर था। राजाराम मोहनराय अगर परलोक के संभावित अस्तित्व की बात मानने को तैयार हो गए थे, तो वह सिर्फ इसलिए कि उनके आंदोलन के प्रसार के लिए यह फायदे की चीज थी। अक्षय कुमार और विद्यासागर संशयवादी थे, जिन्होंने इस तरह के सवालों पर किसी किस्म की चर्चा से साफ इनकार कर दिया था। ईश्वर है या नहीं, यह पूछे जाने पर विद्यासागर का जवाब था कि ''ईश्वर के बारे में सोचने के लिए मेरे पास वक्त नहीं है क्योंकि अभी तो इस धरती पर ही बहुत काम किया जाना है।'' बंकिमचंद्र और विवेकानंद ने इहलौकिक उद्देश्यों के लिए धर्म के इस्तेमाल पर जोर दिया और कहां कि धर्म को मनुष्य की भौतिक समस्याओं का समाधान पेश करना चाहिए। विवेकानंद ने एक बार कहा था, ''तुम्हारी भक्ति और मुक्ति की परवाह किसे है, कौन इसकी परवाह करता है कि तुम्हारे धर्मग्रंथ क्या कहते हैं? मैं बड़ी खुशी से एक हजार बार नरक जाने को तैयार हूँ, अगर इससे में अपने देशवासियों को ऊँचा उठा सकूँ।

राजा राम मोहन राय :

- राजा राम मोहन राय को '**भारतीय पुनर्जागरण का जनक/नव दिन अतीत और वर्तमान के मध्य सेतु/भारतीय राष्ट्रवाद का जनक/नवभारत का तारा/प्रभात का तारा/आधुनिक भारत का जनक**' कहा जाता है। उनका जन्म 1772 ई. में राधानगर नामक एक गांव में (हुगली जिला, बंगाल) हुआ था। इनमें पिता का नाम रमाकान्त था। इनके पिता के द्वारा इन्हें राम की उपाधि दी गई। राय की उपाधि बंगाल के नवाब द्वारा दी गई। 9 वर्ष की अवस्था में इनका प्रथम विवाह हुआ लेकिन विवाह के 1 वर्ष भीतर ही इनकी पत्नी की मृत्यु हो गई। इसके बाद राजा राम मोहन राय का दूसरा व तीसरा विवाह सम्पन्न हुआ। इनकी दूसरी पत्नी का नाम श्रीमति देवी और तीसरी पत्नी का नाम उमा देवी था।
- राजा राम अंग्रेजी, ग्रीक, फ्रेंच, लैटिन, यूनानी, हिब्रू सहित 12 भाषाओं का ज्ञान था।
- 1803 में पिता की मृत्यु के बाद कम्पनी में जॉन डिग्बी के दीवान बने व 1814 तक कार्य किया। राजा राम मोहन राय ने अपने विचारों को स्पष्ट करने के लिए 1803 में फारसी भाषा में **तुहफात-उल-मुवाहिद्दीन (एकेश्वरवादियों को उपहार**/A Gift to monotheists ए-गिफ्ट टू मोनोथिस्ट) प्रकाशित की। इस ग्रंथ में एक देश, एक लोग, एक देवता का संदेश दिया। इस पुस्तक में **मूर्ति पूजा का खण्डन** किया, जिससे क्रोधित होकर इनके पिता ने इन्हें घर से निकाल दिया। इसके बाद एकेश्वरवाद के प्रचार के लिए 1815 ई. में आत्मीय सभा की स्थापना की। 1816 ई. में वेदांत सोसायटी की स्थापना की। इसका प्रमुख कार्य है- समकालीन समाज में वेदान्तों से परिचित करना, वेदान्त के आत्मा की अमरता के सिद्धान्तों को स्वीकार किया। 1821 ई. में **कलकत्ता यूनीटेरियन कमेटी** की स्थापना की।
- राजा राममोहन राय ने टच मित्र डेविड हेयर की सहायता से 1817 ई. में **हिन्दू कालेज** और 1825 ई. में **वेदांत कालेज** की स्थापना **कलकत्ता** में की।
- सर्वप्रथम ब्रह्म समाज की स्थापना 20 अगस्त 1828 को कलकत्ता में कमल बोस के मकान में किराए के कमरे पर राजा राममोहन राय, ताराचंद्र चक्रवर्ती, चंद्रशेखर देव के द्वारा की गई। इसके प्रथम सचिव ताराचंद्र चक्रवर्ती बने।
- यह आधुनिक भारत में हिंदू धर्म का पहला सुधार आंदोलन बना। जो आगे चलकर ब्रह्म समाज के नाम से प्रसिद्ध हुआ। ब्रह्म समाज को हिन्दू धर्म को नवीन आधुनिक और सरल बनाने का श्रेय दिया जाता है। ब्रह्म समाज में निराकार ईश्वर की उपासना व मूर्ति पूजा का विरोध किया जाता है। राजा राममोहन राय ने जाति एवं नस्ल सम्बन्धी समस्त भेदभाव समाप्त करने हेतु एवं महानिर्वाण तंत्र में प्रष्टि प्रवाह का शैव स्वरूप अंगीकार करने का सुझाव दिया। ब्रह्म समाज में प्रार्थना **रविवार** को होती थी।
- ब्रह्म समाज का स्वरूप भारतीय था और इसे **अद्वैतवादी हिन्दूओं की संख्या** कहा जा सकता है जिसका उद्देश्य हिन्दू धर्म को रूढ़ियों, अंधविश्वासों से मुक्त करके नवीन रूप प्रदान करना था। इस संस्था द्वारा **मूर्ति पूजा, अवतारवाद, बहुदेववाद, पुरोहितवाद** आदि का खण्डन किया गया तथा **ईश्वर की एकता** पर बल दिया गया। इन्हें **आत्मा की अमरता** पर पूर्ण विश्वास था।
- ब्रह्म समाज का प्राथमिक उद्देश्य हिन्दू धर्म को उसकी बुराइयों से अलग करना और एकेश्वरवाद का प्रचार-प्रसार करना था। 1819 में राजा राममोहन राय ने मद्रास के विद्वान 'सुब्रह्मण्यम भारती' को मूर्ति पूजा के प्रश्न पर शास्त्रार्थ में पराजित किया।
- 1820 में राजा राममोहन राय की पुस्तक 'दी गाइड टू पीस एण्ड हैप्पीनेस (ईसा के शांति वचन एवं खुशहाली)। इस पुस्तक का